लोक
कथा
माला
कर भला, होगा भला

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

25/6/82
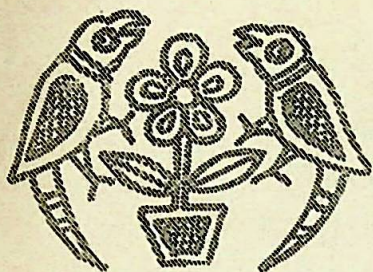
कर भला होगा भला

मैथिली की लोक-कथाएं

•

भगवानचन्द्र 'विनोद'

•

१९८०

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन
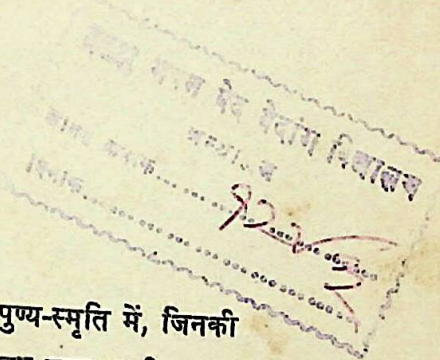
स्व. माताजी की पुण्य-स्मृति में, जिनकी
गोद में बैठकर बहुत सारी
कथाएं सुनीं.

—विनोद

प्रकाशकीय

हमारे लोक-जीवन में लोक-कथाओं का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज भी देहातों में एक व्यक्ति कहानी कहता है और कुछ लोग उसके इर्द-गिर्द बैठकर बड़े चाव से कहानी सुनते हैं। कभी-कभी तो एक-एक कहानी कई-कई रात तक चलती है। क्या मजाल कि सुनने वाले ऊब जायं! उन कहानियों में कौतूहल-भरी चीजों के साथ-साथ पुराने जमाने की बड़ी सजीव तथा मनोरंजक झांकी मिलती है।

हिन्दी और उसके परिवार की जनपदीय भाषाओं में इन कथाओं का अनंत भण्डार है। हिन्दी के पाठक उनसे परिचित हो सकें, इस उद्देश्य से हमने लोक-कथाओं की एक पुस्तक-माला प्रकाशित की है। उसकी पहली पुस्तक में बुन्देलखण्डी, ब्रज, राजस्थानी, मालवी आदि भाषाओं की एक-एक कहानी मूल भाषा में हिन्दी रूपान्तर के साथ दी है। तत्पश्चात् प्रत्येक भाषा की लोक-कथाओं की एक-एक स्वतंत्र पुस्तक निकाली है। अंत में एक कहानी मूल भाषा में दे दी है। अबतक बुन्देलखण्डी, ब्रज, राजस्थानी, मालवी, मैथिली तथा गढ़वाली के संग्रह निकल चुके हैं। इस माला को पूरा करने के बाद हमारा इरादा भारतीय भाषाओं की लोक-कथाएं भी प्रकाशित करने का है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि इन कहानियों की सभी पुस्तकें बहुत ही रोचक और मनोरंजक हैं।

पहले संस्करण में पुस्तकों को सचित्र नहीं किया जा सका था। इस संस्करण में उनके चित्र दे दिये गए हैं। इससे पुस्तकें और भी आकर्षक बन गई हैं।

हमें विश्वास है कि यह पुस्तकमाला घर-घर पढ़ी जायगी।

—मंत्री

दो शब्द

कथाओं का श्रीगणेश उसी समय हुआ, जिस समय धरती पर आदमी पैदा हुआ। कथाओं का पता उस समय सें मिलता है, जिस समय से संसार के सर्वप्रथम ग्रंथ वेद का आविर्भाव हुआ। उसमें भी कथाएं हैं। फिर उपनिषद् का युग आया। उसमें भी कथाओं के माध्यम से ही दर्शन-शास्त्र के गहन-गंभीर विषयों को समझाया गया। पौराणिक ग्रंथ तो कथाओं के भंडार ही हैं।

स्पष्ट है कि कथाओं का सत्कार हमारे यहां चिर सनातन है। जिस समय शुकदेव मुनि राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत की कथा सुनाने बैठे, देवताओं ने स्वर्गलोक से विमान और अमृत का घड़ा भेजा कि राजा परीक्षित अमृत पीकर अमर हो जायं। उन्हें मृत्यु का भय न रहे। शुकदेव मुनि को स्वर्गलोक में बुलाया कि वहां वह भगवान की लीलाओं की कथा सुनायें। जो हो, यह प्रसंग कथा की महत्ता पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालता है। देवताओं ने जिस अमृत को बड़ी कठिनाई से प्राप्त किया था, उसे भी कथा सुनने के लोभ से देने को तैयार हो गये।

मैथिल-जनपद में लोक-कथा की अजस्र धारा गतिमान दृष्टिगोचर होती है। बच्चा कुछ सोचने-समझने के योग्य होते ही अपनी नानी-दादी की गोद में बैठकर उससे कहानियां सुनने के लिए मचलने लगता है।

अन्य जनपदों की भांति मैथिल-जनपद में यह नियम है कि जबतक कहानी सुननेवाला बीच-बीच में 'हूं-हूं' करके हुंकारा न भरेगा तबतक कहानी सुनानेवाले को कहानी कहने में मजा नहीं आवेगा।

मैथिली बहुत ही मधुर होने के कारण श्रोताओं को अपनी ओर आकृष्ट करने की सहज क्षमता रखती है और वह कहानी को अत्यन्त रोचक बना देती है। जिस भाव-भंगिमा, उमंग और उत्साह से कहानी

कहनेवाला कहानी आरंभ करता है, उससे कहानी अपने-आप आगे बढ़ती जाती है और सुननेवाले ऐसे विभोर हो जाते हैं कि कभी-कभी घण्टों कहानी चलती है और वे सबकुछ भूलकर कहानी के कल्पना-कानन में विहार करने लग जाते हैं। उस समय कहानी कहनेवाला अपनी जादूभरी वाणी के चमत्कार से काम लेने लगता है। वह अपने श्रोताओं को घण्टों तक बांधे रखता है, टस-से-मस नहीं होने देता। शब्द-पर-शब्द जमाता चला जाता है। समय का घोड़ा कल्पना-लोक में सरपट दौड़ने लगता है। मुहावरेदार भाषा की चटनी वह चखाता चलता है। अगर क़िस्से में किसी वीर सेनापति या राजकुमार का प्रसंग चल रहा होता है तो श्रोताओं के हृदय में वीर-रस की भावना सजग हो उठती है। अगर भूत-प्रेत का हिस्सा हो तो बालक डर के मारे कांप उठते हैं। परियों की कहानी सुनते समय बालकों की आंखों में बिजली की तरह चमक आ जाती है, जैसे वे भी क़िस्से के राजकुमार की तरह सात समुन्दर पार रहने वाली परी के देश में विवाह करने चल पड़ने की तैयारी में हों।

हां, मैथिल-जनपद का कहानी सुनानेवाला कहानी कहने के पूर्व एक अजीब लतीफ़ा भी कह सुनाता है :

खिस्सा ऐसी झूठी,
बात ऐसी अनूठी,
कहनेवाला झुट्ठा,
सुननेवाला सच्चा,
आंख का देखा नहीं कहता हूं,
कान का सुना कहता हूं,
कहनेवाले के सिर पर सोने का छत्तर,
सुननेवाले के सिर पर अस्सी मन का पत्थर,
जागता संसार,
सोता पाक परवरदिगार;
तिसी ऐसा लम्बा,
मसूर ऐसा चौड़ा,
दही की दलदल,

मट्ठे की पहाड़,
मक्खी ने मारी लात,
भेज दिया गुजरात;
एक पियाज में नौ मन पुच्छी,
हमरे ऐसा खिसक्कड़[1] उसमें कितना लटक रहा है !

मैथिल-जनपद की कथाओं का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहां कथा को 'खिस्सा' कहते हैं और कथाओं की मौखिकता की ओर संकेत करने के लिए उन्हें 'पेहानी' कहते हैं। कथाएं छोटी-बड़ी सभी प्रकार की होती हैं। कभी-कभी कोई किस्सा इतना लम्बा होता है कि सात दिन और सात रात बीत जाने पर भी उसका अन्त नहीं होता। यहां यह कह देना आवश्यक है कि मैथिल-जनपद में किस्सा दिन में नहीं कहा जाता। लोगों का मानना है कि दिन में किस्सा कहने से राही राह भूल जाता है और सुननेवाले का मामा अंधा हो जाता है। इसीलिए माताएं तो दिन में कहानी कहतीं ही नहीं।

मैथिली लोक-कथाएं गद्य में कही जाती हैं। कुछ कथाएं ऐसी भी होती हैं, जिनमें संस्कृत के चंपुओं की भांति गद्य-पद्य दोनों का उपयोग होता है। कहानी कहनेवाला पदों को स्वर में कहता है और गीतों को मोहक ढंग से गाते हुए कहता है। कथाएं मैथिली भाषा में कही जाती हैं, परन्तु उनके अन्तर्गत आये हुए राजा, महाराजा, राजकुमार, सेठ, साहूकार, साधु-महात्मा, फकीर आदि खड़ी बोली हिन्दी में बातें करते हैं।

मैथिली लोक-कथाओं को इन भागों में विभाजित कर सकते हैं: १. देवताओं, दानवों और भूत-प्रेतों की कथाएं २. सृष्टि की कथाएं ३. परी की कथाएं, ४. राजा-रानी की कथाएं, ५. सिख-चुलिया की कथाएं, ६. पशु-पक्षी की कथाएं, ७. व्रत-त्योहार की कथाएं, ८. बादशाह-बीरबल की कथाएं, ९. पौराणिक कथाएं, १०. बुझौवल की कथाएं, ११. यौन-सम्बन्धी कथाएं, १२. नीति-कथाएं, १३. गोनू ओझा की कथाएं, १४. विविध कथाएं।

---

१. कहानी कहनेवाला

मैथिल-जनपद में कहानी का अंत प्राय: इस प्रकार किया जाता है :

खिस्सा खतम,

पैसा हजम,

खिस्सा गेल बन में,

समझूं अपना मन में.

इस पुस्तक में मैंने मैथिल-जनपद की कुछ लोक-कथाएं चुनकर दी हैं। मुझे विश्वास है कि पाठकों को इन कहानियों के पढ़ने में बड़ा आनंद आवेगा।

—भगवानचंद्र 'विनोद'

विषय-सूची

□

कर भला
होगा भला

करभला होगा भला

एक ब्राह्मण के सात बहुएं थीं। छः के नैहर में कई भाई-भतीजे थे, किंतु सबसे छोटी के मायके में कोई न था। जब सावन आया तो सब बहुओं को उनके भाई-भतीजे आकर ले गये। छोटी बेचारी को लेने कोई नहीं आया। वह मन-ही-मन बहुत दुखी हुई और मकान के पिछवाड़े जाकर फफक-फफक-कर रोती हुई कहने लगी, "मेरे लिए नागराज भी तो जंगल से नहीं निकलते, जो मुझे यहां से ले जाते !"

संयोग से नागराज ने उसकी बात सुन ली। उनसे उसका विलाप न देखा गया। उसपर उन्हें बड़ी दया आई। कुछ रात

बीतने पर उसके ससुर के सामने एक आदमी आया। उसकी देह का रंग नारंगी के छिलके के जैसा था। पांच हाथ लम्बा बदन और चेहरा चमकता हुआ। उसके सिर के बाल खड़े थे और आंखें लाल मणि की तरह चमक रही थीं। बात-बात में वह अपनी जीभ बाहर निकालता था।

ब्राह्मण ने उसका परिचय पूछा तो उसने कहा, "आपकी छोटी बहू मेरी भानजी लगती है। जब उसका जनम हुआ था, मैं परदेश चला गया था। इससे आप लोगों से मेरी जान-पहचान नहीं हो सकी। मेरी भानजी के मायके में अब कोई नहीं रहा, इसलिए मैं उसे विदा कराने आया हूं।"

ब्राह्मण को बड़ा अचरज हुआ, क्योंकि उस आदमी से अब-तक कभी भेंट नहीं हुई थी। इसलिए उन्होंने घर जाकर छोटी बहू से पूछ लेना ठीक समझा। वह अंदर गये और छोटी बहू से बोले, "बहू, तुम्हारे मामा तुम्हें लिवाने आये हैं। तुम उन्हें जानती हो?"

छोटी बहू सालों से वहां रहते-रहते तंग आ गई थी। सोचा, चलो, कुछ दिन घूम ही आऊं। तबीयत बहल जायगी। बोली, "हां, मैं मामा को जानती हूं।"

मामा ने रात को दूध पिया और धान का लावा खाया। बिदाई की बात पक्की हो जाने पर सब सो गये। सूरज निकलने के पहले ही वे जाने को तैयार हो गये। बहू ने अपने सास-ससुर के पैर छूकर प्रणाम किया। फिर गांव के बाहर अपने ग्राम-देवता को सिर झुकाकर वह फुदकती हुई अपने मामा के पीछे चलने लगी। वह बहुत खुश थी। उसके पैरों को मानो पंख लग गये थे। वे चलते रहे, चलते रहे। जब सूरज पच्छिम में डूबने

को हुआ तो वे एक बियाबान जंगल में पहुंचे। वहां अचानक रुककर मामा ने पूछा, "तुमको सांपों से तो डर नहीं लगता ?"

छोटी बहू, जिसका नाम मणि था, बोली, "मामा, सांप से किसको डर नहीं लगता ?"

मामा ने कहा, "पुराने जमाने में लोग सांप से नहीं डरते थे। आज भी जबतक आदमी उन्हें छेड़ते नहीं तबतक वे नहीं बोलते। पहले जमाने में लोग सांपों को नहीं मारते थे। वे उन्हें भगवान की ही देन समझते थे। भगवान ने सब प्राणियों को एक-दूसरे की भलाई के लिए बनाया है। उस समय सांपों का आदर होता था, पूजा होती थी। उन्हें लोग बरसात में दूध-लावा खिलाते थे और मजे की बात यह कि उन्हें खिलाकर तब आप खाते थे। उस समय सांप भी लोगों का बुरा नहीं चाहते थे। जब आदमी उनकी जान के गाहक बनने लगे तब वे भी आदमी को नुकसान पहुंचाने लगे। खैर, बेटी, तू डरना नहीं। मैं नागराज ही हूं। तेरा दुःख मुझसे नहीं देखा गया और तूने मुझे याद भी किया था, इसलिए तुझे अपने घर नागलोक लिये जा रहा हूं। मैं तेरा धरम का मामा हूं, तू मेरी भानजी है। अब तेरा अनिष्ट कोई भी नाग नहीं करेगा। तू जरा भी मत डरना। अब मैं अपने असली चोले में आ रहा हूं। आंखें मूंद कर तू मेरे फन पर बैठ जाना।"

इतना कहकर नाग ने अपना भयानक रूप धारण कर लिया। मणि पहले तो डरी, फिर हिम्मत करके वह उसके फन पर बैठ गई। कुछ ही क्षण में वे नागलोक पहुंच गये। वहां सबसे मणि की जान-पहचान करादी गई।

कुछ ही दिन में मणि का रहा-सहा डर भी जाता रहा।

नागराज ने सब सांपों से कह दिया था कि वे उससे कुछ न कहें, न उसे हैरान करें। सो सब उसे प्यार करने लगे। मणि की मामी नागमती तो उसपर जान ही देने लगी। इस तरह बहुत दिन निकल गये, पर मणि का मन ऊबा नहीं। कभी वह धामन के साथ हिरनी की तरह कुलाँचे भरती तो कभी बच्चों के साथ खेलती।

मणि की मामी बड़ी नागिन बहुत ही तेज थी। उसका स्वभाव बड़ा क्रोधी था, लेकिन मणि के साथ उसका व्यवहार बहुत ही नरमाई का रहता था।

कुछ दिनों बाद मणि की मामी ने बहुत-से अंडे दिये और कुछ ही दिनों में बच्चे किलबिल-किलबिल करने लगे। कोई-कोई बच्चा मणि के मुंह मार देता, कोई दूसरी तरह से हैरान करता। मणि को उनसे डर लगने लगा। एक दिन उसने मामी से कहा, "मामी, मुझें इन बच्चों से बहुत ही डर लगता है।"

मामी ने उसे बहुत समझाया-बुझाया। कहा, "बेटी, अपने हाथ में एक दीया लिये रहा करो, तुम्हारा डर जाता रहेगा। रोशनी के डर से ये बच्चे तुम्हारे पास नहीं आवेंगे।"

उस दिन से वह रात को एक दीया अपने हाथ में लिये रहती। एक दिन कई बच्चे बिना दीये की परवा किये मणि पर झपटे। वह मारे डर के भागी। हाथ से दीया उन बच्चों पर गिर पड़ा, जिससे कुछ बच्चों की पतली पूंछें कटकर अलग हो गईं। अपने बच्चों की यह दुर्गति देखकर मामी आग-बबूला हो गई और मणि को काटने दौड़ी। मणि को काटो तो खून नहीं। भाग्य से उसका मामा उसी समय आ पहुंचा और उसने अपनी स्त्री को समझा-बुझाकर शांत कर दिया।

कुछ दिनों बाद नागराज मणि को अपने फन पर बिठाकर उसकी ससुराल पहुंचा आया।

अगले साल नागपंचमी आई। मणि को अपने नाग मामा तथा भाइयों की याद हो आई। स्वर्ग-सा नागलोक उसकी आंखों के सामने नाच उठा। वह उठी और मकान का कोना-कोना लीप-पोत कर साफ किया। दीवार पर गोबर से नाग का चित्र बनाया और उसकी पूजा की। फिर वह आंचल उठाकर भगवान से अपने नाग मामा और भाइयों की मंगल-कामना करने लगी, "हे भगवान, मेरे मामा और भाइयों को अच्छी तरह रखना। उन पर किसी प्रकार की विपदा न आवे।" कहते-कहते उसकी आँखें बंद हो गईं। उसका हृदय अपने नाग भाइयों की याद करके रोने लगा।

उधर नाग-लोक में पूंछकटे बच्चों ने बड़े होकर अपनी माता से पूंछ कटने का कारण पूछा। माता ने सारा हाल कह सुनाया। सुनकर वे लाल-पीले हो गये और सब एक स्वर से चीख उठे, "हम इसका बदला लेकर दम लेंगे !"

सब-के-सब उसी समय बदला लेने के लिए मणि के यहां के लिए रवाना हो गये।

जिस समय वे मणि के घर पहुंचे, उस समय वह धरती पर माथा टेके भगवान से नाग-भाइयों के सुख की कामना कर रही थी। क्रोध में पागल नाग फूं-फूं करते हुए उसी ओर बढ़े, पर मणि अपने ध्यान में लगी रही।

प्रार्थना करके जब मणि ने आंखें खोलीं तो अपने नाग-भाइयों को देखकर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने झट एक बड़ी परात में दूध भर दिया और धान का लावा उसमें डाल दिया।

नागों ने पेट भर दूध पिया और लावा खाया। सब प्रसन्नता से नाचने लगे। मणि ने उनसे नागलोक के समाचार पूछे और उनके साथ बड़े प्यार का व्यवहार किया। वे भाई आये थे बदला लेने, लेकिन बहन के बर्ताव से उनका सारा गुस्सा जाता रहा और उनका हृदय प्रेम से भर उठा। चलते समय उन्होंने अपनी बहन को एक मणि-माला दी।

उस दिन के बाद सब अच्छी तरह से रहने लगे। □

फूलों की सेज

किसी नगर में एक राजा राज करता था। उसके एक रानी थी। उस रानी को कपड़े और गहनों का बड़ा शौक था। कभी सोने का करनफूल चाहिए तो कभी हीरे का हार, कभी मोतियों की माला चाहिए तो कभी कुछ। कपड़ों की तो वात ही निराली थी। भागलपुरी तसर और ढाके की मलमल के बिना उसे चैन नहीं पड़ता था। सोने के लिए फूलों की सेज। फूल भी कैसे ? खिले नहीं, अधखिली कलियां, जो रात में धीरे-धीरे खिलें। नौकर कलियाँ चुन-चुनकर लाते, दासियां सेज सजातीं। एक दिन संयोग से अधखिली कलियों के साथ कुछ खिली कलियां भी आ गईं। अब तो रानी की बेचैनी का ठिकाना नहीं। उनकी पंखुड़ियां रानी के शरीर में चुभने लगीं। नींद गायब हो गई। दीपकदेव अपना उजाला फैला रहे थे। रानी की यह दशा देखकर उनसे न रहा गया। बोले, "रानी, अगर कभी मकान

बनाते समय राजों को तसले भर-भरकर गिलावा और चूना देने की नौबत आ जाय तो तुम्हें कैसा लगेगा ? क्या तसलों का ढोना इन कलियों से भी ज्यादा अखरेगा ?"

रानी सवाल सुनकर अवाक् रह गई। उसने कोई जवाब नहीं दिया, परंतु तबतक राजा जाग गये थे और उन्होंने सारी बात सुन ली थी।

उन्होंने रानी से कहा, "रानी, दीपकदेव के सवाल को आजमा देखो न।"

रानी राजी हो गई।

राजा ने काठ का एक कठघरा बनवाया, उसमें रानी को बंद कराकर पास की नदी में बहा दिया। कठघरा बहते-बहते किसी दूसरे नगर में नदी-किनारे जा लगा। संयोग से वहां राजा का बहनोई राज करता था। वह नदी पर सैर के लिए आया हुआ था। उसने कठघरे को बहते देखा तो निकलवा लिया। खोला तो उसमें एक सुन्दर स्त्री निकली। रानी के गहने और बढ़िया कपड़े पहले ही उतार लिये गए थे। वह मोटे-फटे चीथड़े पहने हुए थी। राजा उसको पहचान न सका और न रानी ने ही अपना सही पता बताया। राजा ने पूछा, "तुम क्या चाहती हो ?"

रानी ने अपनी इच्छा बताते हुए कहा, "आपका कोई मकान बन रहा हो तो मुझे तसला ढोने का काम दे दीजिए।"

राजा का नया महल बन रहा था, सो उसने रानी को तसला ढोने के काम पर लगा दिया। रानी दिनभर तसला ढोती और मजदूरी के जो पैसे मिलते उनसे अपनी गुजर कर लेती। दिनभर की कड़ी मेहनत के बाद जो रूखा-सूखा मिलता, वही

उसे बड़ा अच्छा लगता और रात को खुरदरी चटाई पर उसे ऐसी नींद आती कि पता न चलता, कब रात निकल गई। बड़े तड़के वह उठ जाती और तैयार होकर बड़ी उमंग के साथ अपने काम में जुट जाती।

इस तरह काम करते-करते बहुत दिन बीत गये। दैवयोग से एक बार उसका पति अपने बहनोई के यहां आया। बिना रानी के उसका मन नहीं लगता था। बहनोई के नये महल को देखने गया तो अचानक उसकी निगाह रानी पर पड़ी। उसने झट उसे पहचान लिया। मेहनत-मजूरी करने से रानी का रंग कुछ सांवला हो गया था, पर बदन कस गया था। रानी ने भी राजा को पहचान लिया।

राजा ने उसके पास जाकर पूछा, "कहो, तसलों का ढोना कैसा लग रहा है ?"

रानी ने कहा, "कलियां देह में गड़ती थीं, पर तसले नहीं गड़ते।"

राजा के बहनोई ने दोनों की बात सुनी। उन्हें बड़ा अचंभा हुआ। उन्होंने पूछा, "क्या बात है ?" राजा ने सारा हाल कह सुनाया। सुनकर बहनोई को बड़ी लज्जा आई। उसने रानी को काम से छुट्टी दे दी। वे दोनों अपने राज्य में लौट आये।

कुछ दिनों बाद राजा ने रानी से पूछा, "रानी, अब कैसा लगता है ?"

रानी ने कहा, "स्वामी, वह आनंद कहां! आलस्य बढ़ता जा रहा है। डर लगता है, कहीं कलियां फिर से न गड़ने लगें।"

राजा ने कहा, "ऐसा है रानी, तो हम एक काम क्यों न करें। दोनों मिलकर दिनभर मजूरी किया करें, रात को

कलियों की सेज पर सोया करें। ठीक है न ?"

रानी ने कहा, "मजूरी करेंगे तो फिर कलियों की कोई दरकार ही नहीं रह जायगी। योंही नींद आ जाया करेगी।"

उस दिन से राजा और रानी मेहनत-मजूरी करने लगे और उनका जीवन बड़े सुख और आनंद से बीतने लगा। □
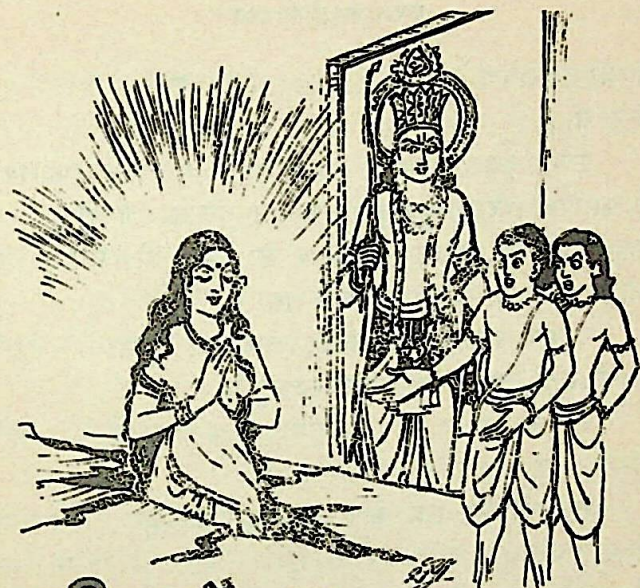
सीता और लव-कुश

सीता के एक ननद थी। एक दिन उसने सीता से कहा, "भौजी, तुम बारह बरस तक रावण के यहां अशोक-वाटिका में रहीं। अच्छा, यह बताओ कि रावण का रूप-रंग कैसा था? जरा उसका एक चित्र बनाकर दिखाओ।"

सीता बोलीं, "बारह बरस मैं वहां रही जरूर, परन्तु मैंने रावण तो दूर, उसकी परछाईं तक नहीं देखी।"

पर ननद के बहुत आग्रह पर सीता ने चित्र बनाना शुरू किया। हाथ बनाये, पैर बनाये। जब आंखें बनाने लगीं तो उधर से राम आ गये। सीता ने उस चित्र को आंचल में छिपा लिया।

राम भोजन करने लगे तो उनकी बहन ने कहा, "भैया,

भौजी तो रावण के विरह में उसका चित्र बनाया करती हैं। देखो न।"

इतना कहकर उसने सीता के आंचल से चित्र निकालकर दिखा दिया। राम बहुत दुखी हुए। उन्होंने लक्ष्मण को बुलाकर कहा, "लक्ष्मण, सीता को साथ ले जाओ और वन में छोड़ आओ। उनका मन तो रावण में लगा है।"

लक्ष्मण ने कहा, "यह कैसे हो सकता है? भाभी गर्भवती हैं। मैं उन्हें किस तरह घर से निकालूं ?"

राम का चेहरा तमतमा आया। क्रुद्ध होकर बोले, "नहीं, तुम्हें जाना ही होगा।"

राम की इस आज्ञा से लक्ष्मण बहुत दुखी हुए। वह सीता के पास गये और बोले, "भाभी, तुम्हारे नैहर से संदेसा आया है। तुम्हें बुलाया है। हम लोग कल चलेंगे।"

यह सुनकर सीता बोलीं, "हे लक्ष्मण, मेरे नैहर में अब कौन रह गया है ? न मेरे पिता हैं, न माता। भला मुझे कौन बुलावा भेजेगा ?"

सीता महारानी तो तीनों लोक की बात जानती थीं। वह सब जान गईं। उन्होंने ननद को शाप दिया, "नदी-पोखर तुम्हारे लिए सब सूख जायेंगे और तुम्हें पीने को पानी तक नहीं मिलेगा। तुम टिटहरी बन जाओगी। उल्टी होकर सोओगी।"

सीता के शाप देते ही ननद टिटहरी बन गई। अगले दिन सीता शृंगार करके तैयार हो गईं और लक्ष्मण के साथ रथ पर जा बैठीं।

सीता ने आंचल में सरसों भर ली। उसे रास्ते में बिखेरती गईं और कहती गईं, "हे सरसों, इसी रास्ते से लक्ष्मण लौटेंगे।

जो हुआ, उसमें उनका कोई दोष नहीं है। तुम फैली रहना, जिससे उन्हें रास्ते का पता रहे और वह अच्छी तरह से घर आ जायं।"

लक्ष्मण और सीता एक वन में पहुंचे, दूसरे में गये, फिर तीसरे में। अब सीता को प्यास लगी। वह लक्ष्मण से बोलीं, "लक्ष्मण, मुझे बड़ी प्यास लगी है। गला सूखा जा रहा है। कहीं से थोड़ा पानी लाकर पिलाओ।"

लक्ष्मण ने कहा, "भाभी, तुम इस चंदन के पेड़ की छाया में बैठो। मैं पानी खोजने जाता हूं।"

शीतल हवा चल रही थी। चंदन के पेड़ की छाया में सीता प्यास के मारे मूर्च्छित हो गईं। लक्ष्मण ने कदंब के पत्ते तोड़े और दोना बनाकर उसमें पानी भरकर रख दिया। फिर सीता को बेहोश पड़ा छोड़कर अयोध्या को चले गये। सीता को जब होश आया तो वह चौंककर उठ बैठीं। अपने को अकेली देखकर बोलीं, "हाय, लक्ष्मण कहां गये ? जाते समय मुझे जगाया तक भी नहीं ! मैं उन्हें आंखें भरकर देख तो लेती और स्वामी को उनके हाथ संदेसा भेज देती।"

वहां से सीता एक साधु की कुटिया में गईं। साधु ने उन्हें अपने पास रख लिया। वहीं पर सीता के एक पुत्र हुआ। पुत्र को साधु की कुटिया में सुलाकर सीता वन में घूमने चली जाया करती थीं। एक दिन ऐसा हुआ कि साधु से बिना कहे वह अपने पुत्र को गोदी में लेकर जंगल में घूमने चली गईं। साधु ने खाट पर बच्चे को न देखा तो खोजा, पर वह न मिला। उसने मन में सोचा, "सीता को बहुत दुःख होगा। उसका बच्चा न जाने कौन ले गया ! भेड़िया ले गया, गीदड़ ले गया, या क्या हुआ ?"

इसके बाद साधु ने कुश ली और उसका लड़का बनाकर खाट पर सुला दिया। बोले, "हे भगवान, इसमें प्राण भर दो, नहीं तो सीता आवेगी तो वह बहुत हैरान होगी।"

भगवान ने साधु की बात मान ली और उसमें प्राण डाल दिये। लड़का खाट पर पड़ा-पड़ा रोने लगा।

सीता जब लौटीं तो देखती क्या हैं कि बिस्तर पर पड़ा कोई बालक रो रहा है। उन्होंने साधु के पास जाकर पूछा, "बाबा, यह किसका लड़का है ? मैं तो अपना बच्चा साथ ले गई थी। यह कहां से आया ?"

साधु को उसकी बात सुनकर अचरज हुआ; पर बोला, "यह भी तुम्हारा ही लड़का है। मुझे खबर नहीं थी। अब तुम्हीं इसको भी पालो। जो लड़का तुम्हारी नाल से पैदा हुआ है, उसका नाम 'लाभ' (लव) होगा और कुश से पैदा होने के कारण इसका नाम 'कुश' होगा। दोनों तुम्हारे ही बेटे हुए।"

सीता माता दोनों पुत्रों को पालने-पोसने लगीं। धीरे-धीरे दोनों सयाने हो गये। दोनों खेलते, खाते और जंगल में शिकार करते।

एक दिन संयोग से राम उस जंगल में आ पहुंचे। उन्होंने बालकों को जंगल में शिकार खेलते हुए देखा। उनका रूप-रंग देखकर वह मुग्ध हो गये। पूछा, "बच्चो, तुम दोनों का क्या नाम है और तुम्हारे माता-पिता कौन हैं ?"

दोनों लड़कों ने जवाब दिया, "हम दोनों का नाम लव और कुश है। हम लोग अपने पिता का नाम नहीं जानते, परंतु माता का नाम सीता है।"

राम ने कहा, "बच्चो, मुझे वहां ले चलो, जहां तुम्हारी

माता रहती हैं।"

दोनों भाई उन्हें अपनी कुटिया में ले गये और अपनी माता से जाकर बोले, "मां, तू अपना सिर ढंक ले। बाहर द्वार पर रामजी खड़े हैं। वह तुझे बुलाते हैं।"

सीता माता ने कुछ जवाब नहीं दिया। उनकी आंखें डब-डबा आईं। उन्होंने मन-ही-मन धरती माता को प्रणाम कर कहा, "हे धरती माता, तुम फट जाओ। मैं उसमें समा जाऊं। ऐसे पुरुष का मैं मुंह देखना नहीं चाहती, जिसने बिना अपराध के गर्भवती नारी को वनवास दे दिया।"

धरती माता फट गईं। सीता उसमें समा गईं और राम पत्थर बनकर द्वार पर खड़े रहे। □

चार कवि

किसी नगर में चार ब्राह्मण रहते थे। चारों बहुत ही गरीब थे और पढ़ने-लिखने के नाम पर उनके लिए काला अक्षर भैंस बराबर था। खाने-पीने की तंगी रहती थी। छोटा-मोटा काम वे करना नहीं चाहते थे। ब्राह्मण जो ठहरे ! एक दिन चारों ने सोचा कि किसी दूसरे राजा के यहां चलें और तरकीब से दान-दक्षिणा लें। तभी कुछ दिन चैन से कटेंगे। इस कलयुग में यहां तो कोई दान देने से रहा। वैसे भी कहा है न—"घर का जोगी जोगना आन गांव का सिद्ध।" सो तय हुआ कि राजा भोज के दरबार में चला जाय। वहां जो कोई भी जाता है, खाली हाथ लौटकर नहीं आता।

ऐसा निश्चय कर चारों जने चल पड़े। रास्ते में उन्होंने सोचा कि कोई ऐसा कवित्त बनाकर ले चलना चाहिए, जिससे राजा खुश हो जाय और अच्छा इनाम दे दे। चलते-चलते चारों एक जंगल में पहुंचे। भूख-प्यास के मारे बहुत व्याकुल हो गये थे। जंगल में उन्हें जामुन का एक पेड़ मिला। उसपर पकी जामुनें देखकर चारों बहुत खुश हुए। बोले, "जामुनों से ही भूख मिटाई जाय, फिर कुछ देर यहीं आराम करने के बाद आगे चलें।"

चारों ने जी भरकर जामुनें खाईं। इतने में एक ने कहा, "वाह जी वाह, हमारा तो कवित्त भी बन गया!"

सबने उत्सुकता से कहा, "अच्छा, सुनाओ।"

पहले ने कहा, "सुनो—जामुन अंत न पाई।"[1]

इसके बाद चारों थोड़ा आराम करके वहां से चल पड़े। चलते-चलते बहुत दूर निकल जाने पर सड़क के किनारे उन्हें बड़ का पेड़ मिला। चारों वहां सुस्ताने के लिए बैठ गये। धूप इतनी कड़ी थी कि चिड़ियां भी दाना चुगना छोड़कर उस पेड़ पर आ बैठी थीं। वे चींचीं कर रही थीं और एक डाली से उड़-कर दूसरी पर जाकर आपस में लड़ भी रही थीं।

यह देखकर दूसरा ब्राह्मण उछल पड़ा। बोला, "यह लो, हमारा भी कवित्त बन गया।"

तीनों के पूछने पर उसने कहा, "क्या कहें, बड़ी बढ़िया चीज बनी है। बरा तरी मच गै रार!"[2]

वहाँ से उठकर चारों जने फिर आगे बढ़े। चलते-चलते

---

१. ऐसी जामुन तो कभी खाने को मिली ही नहीं.

२. बट के पेड़ पर झगड़ा हो गया है.

रास्ते में गूलर का पेड़ मिला। चारों ने सोचा कि चलो, कहीं पके गूलर हों तो खाते चलें। वहां पहुंचने पर एक भी गूलर नहीं मिला। निराश होकर चलने लगे कि तीसरे ने कहा, "ठहरो जी, हैरान होने की कोई बात नहीं है। हमारा भी कवित्त बन गया!"

तीनों के पूछने पर उसने सुनाया, "ऊमर रहै निझर गै।"[१]

इसके बाद वे सब वहां से चल पड़े। अब चौथा ब्राह्मण बड़ी चिंता में पड़ गया कि सबने कवित्त बना लिये, वही रह गया। यही सोचता वह जा रहा था कि इतने में गांव की एक स्त्री टोकरी में पीपल बीनकर लिये जा रही थी। चौथे ने पूछा, "अरी बहन, क्या लिये जा रही है?"

"पीपर बीछकर लाई हूं।" उसने जवाब दिया।

बस! चौथा उछल पड़ा, बोला, "वाह क्या कहना! यह लो, मैंने भी बाजी मार ली। मेरा भी कवित्त बन गया—पीपर लाई नार।"[२]

अब क्या था! चारों हँसी-खुशी से मांगते-खाते कुछ दिनों के बाद राजा भोज के दरबार में पहुंचे। राजा को खबर भेजी कि हम चार कवि नया कवित्त सुनाने आये हैं। राजा भोज ने उन्हें बड़े आदर-सत्कार के साथ ठहराने की आज्ञा दी। चारों का खूब स्वागत हुआ। दूसरे दिन दरबार लगा। चारों कवि बुलाये गये। राजा ने उनका अभिनंदन करते हुए कहा, "अब आप लोग अपना-अपना कवित्त सुनाइये।" चारों में से एक ने कहा, "राजन, हम आपको अधिक कष्ट नहीं देंगे। बुद्धिमानों का

---

१. गूलर के फल-फूल सब झड़ गये.

२. नारी पीपल चुन लाई है.

काम है थोड़ा सुनना, ज्यादा समझना । अब आप हमारे कवित्त सुनिये ।

पहला—"जामुन अंत न पाई ।"
दूसरा—"बरा तरी मच गै रार ।"
तीसरा—"ऊमर रहै निझर गै ।"
चौथा—"पीपर लाई नार ।"

सुनकर राजा और दरबारी कवि सब चकित हो गये । एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे । आपस में काना-फूंसी करने लगे । अभी तक दरवार में इतने कवि आये, पर ऐसे कवियों का कभी आगमन नहीं हुआ । राजा भोज स्वयं उनके कवित्त को नहीं समझ सके । पर अपनी नादानी कैसे प्रकट करते! उन्होंने वहुत-सा दान-दक्षिणा देकर चारों को विदा किया ।

धन लेकर वे चारों हँसी-खुशी घर की ओर चल दिये । उधर राजा भोज बड़े बेचैन और चिंतित थे कि जो कवित्त सुनाये गए उनका अर्थ क्या है ? वहुत सोचने पर भी जव उनकी समझ में कुछ न आया तो उन्होंने महाकवि कालिदास को बुलवाया ।

कालिदास ने राजा को उदास देखकर पूछा, "राजन्, आप इतने चिंतित क्यों हैं ?"

राजा ने कहा, "अभी चार कवि कवित्त सुनाकर चले गए हैं । उनका अर्थ दरबारियों की समझ में नहीं आ रहा है । स्वयं मैं भी हैरान हूं । उनका अर्थ बड़ा ही गूढ़ मालूम पड़ता है । कवित्त ये हैं :

जामुन अन्त न पाई ।
बरा तरी मच गै रार ॥

ऊमर रहै निझर गै।
पीपर लाई नार॥

सुनकर कालिदास ने कहा, "राजन, इनका अर्थ तो साफ है। मंदोदरी रावण को समझा रही है कि हे स्वामी, आप किस-से लड़ रहे हैं ?—'जामुन अंत न पाईं'—अर्थात्, जिसका ऋषि-मुनियों ने कभी अन्त नहीं पाया, उससे 'बरा तरी मच गै रार' आपने आज बराबरी करके झगड़ना शुरू किया है, सो हे प्राणनाथ, 'ऊमर रहै निझर गै' आपके उम्र-रूपी पेड़ के फल गिर गए, अर्थात् अब आप अधिक दिन जीवित नहीं रह सकते, क्योंकि 'पीपर लाई नार'—हे प्रियतंम, आप दूसरे की नारी को उड़ाकर अपने घर लाये हैं।"

यह सुनकर राजा भोज बहुत प्रसन्न हुआ और उन चारों कवियों की उसने बड़ी प्रशंसा की। □

भाइयों का प्रेम

किसी गांव में एक किसान रहता था। उसके दो बेटे थे। बड़े बेटे का ब्याह हो गया था और उसके दो-चार बच्चे भी थे। छोटा अभी कुंवारा था। किसान ने यह सोचकर कि उसके मरने पर आपस में झगड़ा न हो, अपनी धन-दौलत, माल-मता अपने सामने ही दोनों में बराबर-बराबर बांट दिये। जब वह मरा तो उसके दिल में सन्तोष था कि दोनों भाई आपस में प्रेम से रहेंगे।

और सचमुच वे हिल-मिलकर ही रहने लगे। खूब मेहनत करते। हर भाई के दिल में यह भावना रहती कि मैं चाहे जैसे रहूं, पर मेरे भाई को किसी तरह की तकलीफ न होने पाये। वह आराम से रहे।

एक साल दोनों भाइयों के खेत में अगहनी फसल हुई। धान की फसल से दोनों के खलिहान भर गये। देखनेवाले देखते ही रह गए।

दोनों भाई खलिहान पर ही सोते थे। एक रात को अचानक छोटे भाई के मन में विचार आया कि मैं कैसा कठोर दिल का आदमी हूं। कितना मतलबी हूं। मेरे अभी खानेवाला ही कौन

है कि इतना सारा धान ढोकर अपने घर ले जाऊं ! हां, भाई के कई बाल-बच्चे हैं। उनको खाने-पीने की दिक्कत रहती है। क्यों न मैं अपने खलिहान से कुछ बोझा भाई के खलिहान में रख आऊं ? इतना सोच छोटा भाई उठा और अपने खलिहान से एक सोरही[1] धान का वोझा उठाकर भाई के खलिहान में रख आया। फिर आकर चुपचाप सो गया।

संयोग से बड़े भाई के दिल में भी यही वात उठी। उसने भी सोचा कि मैं कितना स्वार्थी हूं। चैन से खाता-पीता हूं और छोटे भाई की ओर कभी देखता तक नहीं कि वह भरपेट खाता है या भूखा रहता है। अकेली जान होने पर भी दिन-भर हाय-हाय करता रहता है। मेरे तो बाल-बच्चे हैं। भगवान की दया हुई तो वे सब कुछ दिनों में जवान हो जायंगे और कमाने लगेंगे। चारों ओर से घर भर जायगा। मगर इस छोटे भाई का तो कोई भी नहीं है। बड़ा भाई वाप के वरावर होता है। क्यों न मैं अपने खलिहान से कुछ बोझे उठाकर उसके खलिहान में रख आऊं ?

सो वह भी अपने खलिहान से एक सोरही धान का वोझा उठाकर जल्दी-जल्दी अपने छोटे भाई के खलिहान में रख आया। उसे डर था कि भाई ने देख लिया तो वह हरगिज नहीं लेगा।

दिन निकलने पर छोटे भाई ने अपने खलिहान के बोझों की गिनती की तो यह देखकर दंग रह गया कि उनमें एक भी कम नहीं हुआ। उधर बड़ा भाई भी यह देखकर दंग रह गया

---

१. सोलह बोझे की एक सोरही होती है.

कि उसके बोझों में से भी एक बोझा तक कम नहीं हुआ। दूसरी रात को भी दोनों भाई उसी तरह चोरी-चोरी एक-एक सोरही धान का बोझा पहुंचा आये। सवेरे दोनों के बोझे फिर बराबर पाये गए।

इस प्रकार यह खेल कई रात तक चलता रहा। आखिर एक रात जब दोनों जने अपने-अपने खलिहान से बोझा उठाये जा रहे थे तो दैवयोग से दोनों एक-दूसरे से टकरा गये। ज्योंही उन्होंने एक-दूसरे को पहचाना, बोझा फेंककर आपस में चिपट गये। आंखों से आंसू बरसने लगे। खलिहान में बोझों की संख्या क्यों नहीं घटती थी, यह भेद बिना कहे-सुने ही खुल गया।

दोनों भाइयों की आंखों से प्रेम के आंसुओं की धारा वह निकली। उससे नीचे पड़ा हुआ पीपल का एक बीज भीग गया, उसमें अंकुर फूट आया और कुछ दिन में वह बड़ा पेड़ हो गया। वह पेड़ आज भी मौजूद है। लोग कहते हैं कि उसकी हवा दूसरे पेड़ों से अधिक ठण्डी है, क्योंकि उसका जन्म प्रेम के आंसुओं से हुआ है। □

डेढ़ बितना

किसी गांव में एक बुढ़िया रहती थी। उसके एक छोटा-सा लड़का था। उसकी ऊंचाई कुल डेढ़ बित्ता थी। इसलिए लोग उसे 'डेढ़ बितना' कहकर पुकारते थे। उसके पिता नहीं थे। मां पास-पड़ोस में पिसाई-कुटाई करके अपनी गुजर-बसर करती थी। डेढ़ बितना रोज मदरसे में पढ़ने जाता था। पर उसके पास न पट्टी थी, न किताब। वह जैसे-तैसे अ-आ, इ-ई, सीख गया था। पास में पैसे नहीं थे कि किताब खरीद सके। जिस समय डेढ़ बितना पैदा हुआ था, उसकी नानी ने उसे एक बछिया दी थी। उस बात को कई बरस हो गये थे। बछिया अब गाय हो गई, पर दैवयोग से वह बांझ निकली।

एक दिन डेढ़ बितना मदरसे से रोता हुआ आया। मां ने पूछा, "क्या बात है, बेटा? क्यों रोते हो?"

डेढ़ बितना बोला, "मां, गुरुजी ने मुझे मारा है। कहते हैं, किताब नहीं है तो मदरसे में क्यों आते हो? मुझे किताब

खरीदवा दो तब मदरसे जाऊंगा।"

मां ने कहा, "बेटा, मेरे पास पैसे कहां हैं ? पिसाई-कुटाई करके लाती हूं। किसी तरह पेट की आग बुझा पाती हूं। गाय का आसरा था। सोचती थी कि दूध देने लगेगी तो सारा दुख दूर हो जायगा। मगर करम की गति कौन जानता है ! इसे तो कोई अब दो कौड़ी में भी नहीं खरीदेगा। उल्टे यह गले का बोझ बन रही है। बेटा, मेरे-तेरे भाग्य में सुख लिखा ही नहीं है। दुःख-ही-दुःख बदा है। दर्जी का फाड़ा कपड़ा तो सींया जा सकता है, पर बेटा दैव का फाड़ा कैसे सींया जाय ? इस गाय को तू लेजा और जंगल में कहीं किसी पेड़ से बांध आ। कोई बाघ आकर इसे खा जायगा। बरसात आ रही है। क्या तो इसे खिलाओगे और कहां इसे बांधोगे ? अच्छा यही है कि इससे पीछा छुड़ा लो।"

मां की बात डेढ़ बितना को जंच गई और वह गाय को हांक कर जंगल में ले गया। वहां पहुंचकर उसने एक मोटे-से पेड़ के तने से गाय को बांध दिया और जैसे ही घर की ओर चलने को हुआ कि एक बुढ़िया उस पेड़ के पास से गुजरी। वह बुढ़िया बड़ी धार्मिक थी। हमेशा जंगल में घूमती रहती थी और चिड़ियों तथा दूसरे पशु-पक्षियों की खोज-खबर लेती रहती थी। वह गाय को खोलकर अपने घर ले गई।

डेढ़ बितना ने यह देखा और घर की ओर चल दिया। रास्ते में उसे एक गौरैया पड़ी हुई दिखाई दी। उसकी एक टांग टूट गई थी। न तो वह चल सकती थी, न उड़ सकती थी। डेढ़ बितना को उसकी दशा देखकर दया आ गई। बोला, "हाय, बेचारी की टांग टूट गई है ! अगर कोई गाड़ी इधर से आ जाय

तो इसका क्या हाल होगा ? पहिये के नीचे कुचलकर मर जायगी !" इसके वाद उसने बड़ी सावधानी से उसे उठाकर अपनी धोती में लपेट लिया। घर पहुंचकर उसने मां को सब हाल सुना दिया।

मां ने डांटते हुए कहा, "यह क्या बला ले आया है ! इसके लिए चुगा कहां से लायेगा ? डाल दे इसे बिल्ली के आगे।"

डेढ़ बितना बोला, "नहीं मां, जब तक इसकी टांग ठीक नहीं हो जायगी और इसमें उड़ने की ताकत नहीं आ जायगी, तब तक मैं इसे पालूंगा। फिर उड़ा दूंगा। देखो तो, कैसी बढ़िया है !"

डेढ़ बितना कुम्हार के यहां से एक फूटा घड़ा मांग लाया। उसमें छोटे-छोटे छेद करके उसने मुलायम घास बिछाई और गौरैया को उसमें रख दिया। रोज वह उसे चारा-दाना देता और पानी पिलाकर उसके घर में रख देता। जिस दिन घर में मां-बेटे के खाने का ठिकाना न रहता, उस दिन गौरैया भी भूखी रहती।

कुछ दिन में गौरैया की टांग ठीक हो गई। एक दिन वह घड़े से चुपचाप उड़ गई और सीधी उस भली बुढ़िया के पास पहुंची, जो जंगल में रहती थी। गौरैया जाकर बुढ़िया के कंधे पर बैठ गई। उस समय बुढ़िया दो छोटे-छोटे बछड़ों की देह सहला रही थी। उसने पूछा, "तू इतने दिनों से कहां चली गई थी ?"

गौरैया ने सारी आपबीती सुना दी। कहानी सुना चुकने पर गौरैया ने पूछा, "ये नन्हे-नन्हे बछड़े किसके हैं ?

वुढ़िया बोली, "उस गाय के हैं, जो कदम के पेड़ के नीचे बैठी जुगाली कर रही है।"

गौरैया ने पूछा, "वह कहां से आई ?"

वुढ़िया ने कहा, "पेड़ से बंधी हुई मिली। मैंने सोचा, इसे कोई सिंह खा जायगा, सो मैं इसे यहां ले आई। जब कभी इसका मालिक इसे खोजता हुआ इधर आयगा, उसे दे दूंगी। लेकिन अभी तक कोई आया नहीं। देखो तो, इसने कितने सुन्दर बछड़ों को जनम दिया है !"

गौरैया उड़-उड़कर बछड़ों के ऊपर मंडराने लगी और अपने पंखों से उनकी देह गुदगुदाने लगी। गाय ने यह देखा तो अपनी पूंछ उठाकर भड़क उठी और गौरैया को भगाने लगी।

कई दिन बीत गये। एक दिन डेढ़ बितना ने अपनी मां से कहा, "मां मैं जंगल में जाता हूं। देखूं, उस गाय का क्या हुआ। मुझे बड़ा दु:ख है कि मैं उसे वहां छोड़ आया।"

मां बोली, "अच्छा बेटा, अगर तेरी इच्छा है तो जंगल में जाकर देख आ।"

डेढ़ बितना जंगल में जा पहुंचा। दिनभर वह गाय को ढूंढ़ता रहा पर उसका पता न लगा। जब रात हुई तो वह जंगल के बहुत ही घने हिस्से में पहुंच गया।

अंधेरे में उसे डर लगने लगा, क्योंकि अभी वह छोटा ही तो था। वह रोने लगा। इतने में उसे पेड़ों के बीच से कुछ दूर पर एक टिमटिमाती रोशनी दिखाई पड़ी। वह उसी तरफ बढ़ने लगा। थोड़ी देर बाद एक खुले मैदान में पहुंचकर देखता

क्या है कि वहां एक छोटी-सी झोंपड़ी बनी हुई है। उसमें वही गाय बैठी जुगाली कर रही थी और उसकी बगल में दो बछड़े बैठे हुए थे।

"नानी-नानी, जल्दी बाहर आओ।" गौरैया ने चहककर कहा, "देखो, यह वही लड़का आया है, जिसने मेरी जान बचाई थी।"

बुढ़िया बोली, "कौन लड़का !"

गौरैया बोली, "वही, जो मुझे रास्ते में पड़ा हुआ देखकर अपने घर ले गया था।"

बुढ़िया बाहर निकली। उसने लड़के को प्यार से बिठाया। पैर धोने के लिए लोटे में पानी दिया और खाने के लिए अच्छी-अच्छी चीजें दीं। सोने के लिए घास पर कम्बल बिछा दिया। अगले दिन वह बहुत सबेरे उठी और डेढ़ बितना से बोली, "बेटा, बाजार में चले जाओ इस गाय को बेच देना और बछड़ों को रख लेना। गाय बेचकर जितने पैसे मिलें, उनसे एक लोहे की गाड़ी और एक लोहे का हल खरीद लेना। फिर बछड़ों को गाड़ी में जोत लेना। वे हैं तो छोटे, पर बड़े मजबूत हैं। तुम्हारी गाड़ी को बड़ी तेजी से खींच ले जायेंगे।"

डेढ़ बितना ने वैसा ही किया। उस दिन रात को वह लोहे की गाड़ी और लोहे का हल लेकर घर गया। बछड़े बड़ी शान से गाड़ी को खींच रहे थे।

जिस समय वह अपने घर पहुंचकर बछड़ों को खोल रहा था, एक आदमी डुग्गी पीटकर कह रहा था, "राजा के पास एक खेत है, जिसमें गेहूं बोया जायगा। जो कोई उस खेत को एक दिन में जोतकर तैयार कर देगा, उसे मुंह मांगा इनाम

दिया जायगा। अगर खेत नहीं जोता जा सकेगा तो उसे छः महीने की कैद भुगतनी होगी और कोल्हू पेरना होगा।"

अगले दिन सबेरे डेढ़ बितना हल में बछड़ों को जोतकर चलने को तैयार हुआ। मां ने पूछा, "कहां जाते हो ?"

डेढ़ बितना बोला, "राजा का खेत जोतने।"

मां ने कहा, "क्या करोगे जाकर ? तुम्हारे बछड़े छोटे हैं। तुम खेत नहीं जोत पाओगे। वहां की जमीन लोहे की तरह कड़ी है और राजा बड़ा बुरा है। वह लोगों को लालच देकर अपना काम करवा लेता है और फिर उन्हें कड़ी सजा भी देता है।"

डेढ़ बितना बोला, "मां, तुम डरो नहीं। मेरा हल लोहे का है। मैं जरूर इनाम लेकर छोड़ूंगा।"

इतना कहकर डेढ़ बितना दौड़ा-दौड़ा गया। खेत में पहुंचते ही उसने अपना लोहे का हल उतारा और बछड़ों को उसमें जोत दिया। थोड़ी देर में राजा की सवारी उधर से निकली।

राजा ने पूछा, "ओ, लड़के तू यहां क्या कर रहा है ?"

डेढ़ बितना बोला, "आपका खेत जोत रहा हूं।"

राजा ने डांटते हुए कहा, "जाओ यहां से। यह काम तुम्हारे और इन बछड़ों के बस का नहीं है।"

डेढ़ बितना बोला, "आप देख लीजियेगा।"

इतना कहकर वह तेजी से हल चलाने लगा। मस्त होकर वह विरहा गाता जा रहा था। बड़ी मुस्तैदी से उसने सारा खेत जोत डाला। बहुत थोड़ी जमीन बाकी रही। यह देखकर राजा का हाल-बेहाल हो गया। वह तो चाहता था कि काम-का-काम हो जाय और इनाम भी न देना पड़े। वह लड़का तो इनाम

लेने पर तुला था और उसका काम पूरा होनेवाला था।

राजा महल में आया और उसने डेंढ़ बितना पर जादू चलाने के लिए एक डायन को भेजा। डायन खेत पर गई और बालक से बड़े प्यार से बोली, "भैया, अब बस करो। काम करते-करते थक गये हो। थोड़ी देर आराम करलो। चांद-सा मुखड़ा कैसा कुम्हला गया है! अब तो थोड़ा-सा ही काम रह गया है। कभी भी खत्म हो जायगा। आओ, मैं तुम्हें एक बड़ी अच्छी कहानी सुनाती हूं।"

बालक उसकी मीठी बातों में आ गया। बालकों को वैसे भी कहानियां बड़ी प्यारी लगती हैं। उसने बछड़ों को रोक दिया और एक लीक पर आकर डायन के आंचल की छाया में बैठ गया। डायन ने कहानी शुरू की, "एक था राजा...।"

कहानी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती गई, बालक पर नींद का असर पड़ता गया और वह थोड़ी देर में सो गया।

डायन ने देखा कि उसकी चाल सफल हो गई। वह बड़ी खुश हो वहां से भाग गई। उसका अंदाज था कि बालक जबतक उठेगा, दिन छिप जायगा। लेकिन वैसा हुआ नहीं। डेढ़ बितना के दिल में लगन लगी थी कि कैसे ही काम पूरा करके इनाम लेना चाहिए। सो कुछ ही देर में उसकी आंख खुल गई और दिन छिपे कि उससे पहले ही उसने बाकी का काम निबटा दिया।

सूरज डूबने पर जब राजा आया तो देखता क्या है कि सारा खेत जुत गया है और डेढ़ बितना अपने बछड़ों की पीठ पर हाथ फेरता हुआ उन्हें शाबासी दे-देकर मुस्करा रहा है।

राजा हार गया और उसे डेढ़ बितना को मुंह मांगा इनाम देना पड़ा।

मिथिला का भिखारी

किसी जमाने में मिथिला के एक गांव में एक बूढ़ा भिखारी रहता था। वह आस-पास के गांवों में भीख मांगता था और अपनी गुजर-बसर करता था।

एक बार मिथिला में अकाल पड़ा। वह भिखारी भीख मांगते-खाते मझौआ परगने[1] की ओर चला। उसने सुन रक्खा था कि—

"अजब देश मझौआ
जहां भात न पूछे कौआ।"

वहां पहुंचकर वह घूमता-फिरता और दिन-भर में बहुत-सा धान जमा कर लेता।

एक दिन गांव के लोगों ने उससे पूछा, "तुम रोज इतना

---

१. यह परगना चम्पारण जिले में है। वहां अब भी बहुत अधिक धान होता है.

धान मांग कर क्या करते हो ?"

भिखारी बोला, "मुझे चार पैला[1] धान मिलता है तो उसमें से एक पैला धान मैं एक राक्षसी को दे देता हूं, एक पैला किसी-को उधार दे देता हूं, एक पैला बहते पानी की धारा में वहा देता हूं और एक पैला से मंदिर के देवता को भोग लगाता हूं।"

लोगों की समझ में उसकी बात नहीं आई। उन्होंने कहा, "बेकार की बात क्यों करता है! अच्छा बता, कहां है वह राक्षसी ? कहां है वह कर्जदार ? कहां है वह बहते पानी की धारा ? कहां है वह मंदिर ?"

भिखारी चुप रहा। गांववालों को जब उत्तर नहीं मिला तो उन्होंने समझा कि यह भिखारी बड़ा भारी पाखंडी है। वे उसपर बहुत नाराज हुए और उसे पकड़कर राजा के पास ले गये। राजा के पूछने पर भी उसने वही जवाब दिया।

राजा की भी समझ में कुछ न आया। उसने कहा, "तुम्हारे कहने का मतलब क्या है ? साफ-साफ समझाकर कहो।"

भिखारी बोला, "हे राजा, मेरी स्त्री तो वह राक्षसी है। उसे सिर्फ खाना, पहनना और सोना आता है। वह कुछ काम नहीं करती।"

राजा ने पूछा, "अच्छा, उधार तुम किसको देते हो ?"

भिखारी बोला, "उधार मैं अपने बेटे को देता हूं। अभी वह छोटा है। मैं अपने हाथ-पैर चलाकर उसे खिलाता हूं। जब मेरे हाथ-पैर थक जायंगे और वह जवान हो जायगा तो वह मुझे

---

१. अनाज तोलने के लिए काठ या कांसे का एक पात्र, जिसमें लगभग सेर भर अनाज आता है.

कमाकर खिलायेगा। इसे मैं उधार देना कहता हूं।"

राजा ने पूछा, "बहते पानी की धारा में धान फेंकने का क्या मतलब है?"

भिखारी बोला, "मेरी एक लड़की है। एक पैला धान वह खा जाती है। अभी वह छोटी है। जब सयानी होगी और कमाने-खाने योग्य बनेगी तो अपने पति के घर चली जायगी। यह सब जानते हुए उसे खिलाने का मतलब बहते पानी में धान फेंकना नहीं तो और क्या हो सकता है?"

राजा बड़े ध्यान से भिखारी की बात सुन रहा था। बोला, "अब यह भी बताओ कि किस मंदिर में किस देवता को तुम रोज एक पैला धान का भोग लगाते हो?"

भिखारी ने कहा, "सरकार, यह अधम शरीर ही वह मंदिर है और मेरे प्राण उस मंदिर के देवता हैं। अगर मैं रोज इस मंदिर और देवता का भोग न लगाऊं तो सारा खेल ही बिगड़ जायगा।"

राजा भिखारी के जबाव से बहुत खुश हुआ। उसने उससे कहा, "तुम तो बड़े भारी पंडित मालूम पड़ते हो। फिर भीख क्यों मांगते हो?"

भिखारी बोला, "सरकार यह सब भगवान की माया है! कोई इसका भेद नहीं जान पाया है। उसके राज्य में पंडित भिखारी होता है और मूरख धनी। उसके राज्य में बगुला सफेद रंग का होता है और कोयल काली! उसके राज्य में पेड़ों में छोटे-छोटे फल आते हैं और बेलों में बड़े-बड़े फल लगते हैं। भगवान को महिमा अपरम्पार है। कहां तक बताऊं!"

भिखारी की चतुराई से राजा बहुत खुश हुआ और उसने बहुत-सा दान-दक्षिणा देकर उसे विदा किया। □

पुराने जमाने की बात है। किसी गांव में एक अहीर रहता था। उसका नाम था ठुठपालराय। वह बहुत ही धनी, सुन्दर, आत्मसंतोषी और धार्मिक था। वह बहुत ही आनन्द के साथ अपनी जिंदगी बिता रहा था।

अचानक एक दिन क्या हुआ कि जब ठुठपालराय की स्त्री पनघट पर दूसरी स्त्रियों के साथ पानी भर रही थी, एक स्त्री ने कहा, "चाहे घर में कितनी ही लक्ष्मी क्यों न हो पर 'ठूंठ' कभी हरा नहीं हो सकता है !"

दूसरी बोली, "नाम से ही खानदान की पहचान होती है।"

इस पर सब स्त्रियां 'ही-ही' करके हँस पड़ीं।

ठुठपालराय की स्त्री समझ गई कि ये बातें उसके पति के नाम को लक्ष्य करके कही जा रही हैं। तिलमिलाकर वह बोली, "चुप रहो, क्यों बेकार मुझे सता रही हो ?"

तीसरी स्त्री ने यह सुनकर मुंह बनाया, बोली, "सच कहती हूं, मेरे 'उनका' ऐसा नाम होता तो मैं चुल्लु-भर पानी में डूब मरती।"

ठुठपालराय की स्त्री को बड़ी चोट लगी। पानी-भरा घड़ा पनघट पर छोड़कर वह घर चली गई और उसी घड़ी से उसने अन्न-जल त्याग दिया। सात दिन, सात रात बीत गये, पर वह पति से एक शब्द न बोली।

ठुठपालराय ने उसकी यह हालत देखी तो पूछा, "क्या बात है ? तुम्हारी देह क्यों सूखती जा रही है ?"

पत्नी एकदम तेज हो उठी। बोली, "आपको फुरसत हो गई पूछने की ? बात यह है कि मैं आपका नाम बदलवाना चाहती हूं। आपका यह 'ठूठ' नाम बड़ा ही बुरा है। कुएं पर औरतें ताने मारती रहती हैं। भाड़ में जाय वह ब्राह्मण, जिसने आपका यह नाम रक्खा !" थर-थर कांपती हुई आवाज में वह बहुत-कुछ बक गई।

ठुठपालराय को उसकी बात सुनकर बड़ी हँसी आई। उसने कहा, "जाओ, तुम भी क्या हो ! छोटी-सी बात में पड़कर अपनी कंचन-सी काया को तुमने गला डाला ! अरे, नाम में ऐसा क्या धरा है ? नाम से काम का महत्व अधिक होता है।"

स्त्री बोली, "जो हो, मुझे अन्न-जल ग्रहण करवाना चाहते हो तो आपको यह नाम बदलवाना ही पड़ेगा।"

ठुठपालराय ने गंभीर होकर कहा, "क्योंजी, मेरा नाम बदलवाकर नकली नाम रखवाओगी ? उससे मेरा क्या बनेगा ? तुम्हें क्या मिलेगा ?"

स्त्री बोली, "तुम्हें कुछ मिले, या न मिले, पर मेरा बहुत

फायदा होगा। मेरी जान बच जायगी।''

ठुठपालराय ने कहा, "देखो, जो स्वाभाविक है, वही सत्य है और वही सुन्दर है। 'ठुठपालराय' नाम से मेरा अपना कुछ नहीं बिगड़ता, मेरी पगड़ी नीचे नहीं झुकती।"

सुनयना बोली, "लेकिन मेरी तो झुकती है।"

ठुठपालराय ने फिर समझाते हुए कहा, "नकलीपन से कभी सुन्दरता नहीं बढ़ाई जा सकती। आडम्बर से आबरू नहीं बढ़ती।"

पर स्त्री पर इस सबका कोई असर न हुआ। वह अपनी बात पर अड़ी रही।

त्रिया की हठ मशहूर है। हारकर ठुठपालराय अपना नाम बदलने के लिए स्त्री को साथ लेकर सुन्दर नाम की खोज में चल पड़ा। चलते-चलते वे दोनों बहुत दूर निकल गये। एक नगर में पहुंचे। नाम की तलाश की। न मिला तो दूसरे नगर में गये। वहां भी भटके, पर कोई बढ़िया नाम हाथ नहीं आया। वह दिन भी बीत गया।

अगले दिन फिर आगे बढ़े। देखते क्या हैं कि "राम नाम सत्त है!" की आवाज लगाते हुए लोग एक मुर्दे को लिये जा रहे हैं। ठुठपालराय ने आगे बढ़कर पूछा, "भइया, इस मरे हुए आदमी का नाम क्या था?"

जवाब मिला, "अमरसिंह।"

सुनकर ठुठपालराय हँस पड़ा। उसकी स्त्री भी मुस्करा उठी। फिर आगे बढ़े। चलते-चलते रास्ते में एक भिखारी मिला। उन्हें देखकर गिड़गिड़ाते हुए बोला, "बाबू, कुछ दे दो।"

स्त्री को उसे देखकर दया आ गई। उसने कुछ पैसे दिये

और पूछा, "क्यों भाई, तुम्हारा क्या नाम है ?"

भिखारी ने उन्हें असीस देते हुए कहा, "मेरा नाम धनपति है।"

इसके बाद दोनों आगे बढ़े। एक गांव में पहुंचे। एक आदमी बड़ी बढ़िया बछिया लिये आ रहा था। स्त्री ने पूछा, "भइया, तुम्हारा नाम क्या है ?"

"दयानाथ !" उसने जवाब दिया।

"तुम्हारी जाति क्या है ?" स्त्री ने फिर पूछा।

"कसाई।" वह बोला।

इसके बाद दोनों पति-पत्नी घर की ओर लौट पड़े। चलते-चलते ठुठपालराय ने स्त्री से कहा, "अमरसिंह, धनपति और दयानाथ, तीनों ही नाम कितने सुन्दर हैं। तुमको तीनों में से कौन-सा पसन्द आया ?"

स्त्री चुप रही, कुछ बोली नहीं।

ठुठपालराय ने कहा, "बोलतीं क्यों नहीं ? इसमें संकोच की क्या बात है ? जो नाम तुम्हें पसन्द हो, वही नाम आज से मैं रख लूंगा।"

स्त्री बोली :

"अमरसिंह तो मर गये, धनपति मांगें भीख।
दयानाथ हत्या करें, तुम ठुठपाल ही ठीक !"

स्त्री की बात सुनकर ठुठपालराय बड़ा खुश हुआ। बोला, "क्यों, अब फिर नाम बदलने को तो नहीं कहोगी !"

स्त्री ने कहा, "नहीं, तुम ठीक कहते थे, आदमी के नाम का नहीं, काम का महत्व होता है।" □

किसी समय की बात है। चार बटोही परदेस जा रहे थे। चलते-चलते रास्ते में उन्हें प्यास लगी। वे एक गांव में पहुंचे तो उन्हें कुआं दिखाई दिया। उस पर एक स्त्री पानी भर रही थी। उन्होंने सोचा कि अगर सब एक साथ जायंगे तो शायद वह पानी पिलाने से इन्कार कर दे। इसलिए सबको अलग-अलग जाना चाहिए। यह सोच एक आदमी कुएं पर गया और उसने उस स्त्री से पानी खींचने के लिए डोल मांगा।

स्त्री ने पूछा, "तुम कौन हो ?"

उसने उत्तर दिया, "मैं बटोही हूं।"

स्त्री ने कहा, "बटोही तो दो हैं। एक सूरज, दूसरा चंद्रमा।

तुम तीसरे कौन से बटोही हो ? सच बोलो, तुम कौन हो ? नहीं तो यहीं बैठ जाओ।"

बटोही से कुछ जवाब न बन पड़ा और वह वहीं बैठ गया।

इतने में दूसरा बटोही आया। स्त्री के पूछने पर कि वह कौन है, उसने कहा, "मैं क्षमतावान् हूं।"

स्त्री ने कहा, "क्षमतावान् तो दो हैं। एक धरती माता, दूसरी स्त्री। तुम कौन हो ? इसका सही उत्तर दो, नहीं तो यहीं बैठ जाओ।"

वह भी उत्तर न दे सका और वहीं बैठ गया। इसी तरह एक-एक करके बाकी के दोनों बटोही आये और उनमें से पहले ने अपने को गरीब और दूसरे ने मूरख बताया। स्त्री ने पहले से कहा, "गरीब तो दो होते हैं। बताओ कौन ?" वह जवाब न दे सका। यही बात दूसरे के साथ हुई।

स्त्री पानी भरकर चारों को साथ लेकर घर की ओर यह सोचकर चली कि वे सब भूखे हैं। उन्हें कुछ खिलाकर पानी पिलाऊंगी। रास्ते में जब उसके पति ने अपनी स्त्री के पीछे चार आदमियों को आते देखा तो गुस्से के मारे आग-बबूला हो गया। उसने बिना कुछ कहे-सुने चारों को पीटना शुरू किया। उसी समय एक दारोगा उस रास्ते से निकला। मार-पीट होते देख उन पांचों को पकड़कर थाने में ले गया और हवालात में बंद कर दिया। जब स्त्री को मालूम हुआ कि उसका पति भी पकड़ा गया है तो वह थाने पहुंची और दारोगा से बोली, "आपने इन्हें क्यों पकड़ा ?"

दारोगा ने कहा, "ये लोग आपस में मारपीट कर रहे थे, इसलिए।"

स्त्री ने कहा, "आपने इन लोगों से मारपीट करने का कारण भी पूछा ?"

दारोगा ने कहा, "नहीं।"

इसके बाद उस स्त्री ने कुएं पर का सारा हाल कह सुनाया। दारोगा ने कहा, "अच्छा, तो तुम्हीं इन चारों सवालों का जवाब दो ?"

स्त्री ने कहा, "दो का तो मैं दे चुकी हूं। आप भी सुन लीजिए। बटोही दो होते हैं—एक सूरज, दूसरा चंद्रमा, जो कभी नहीं बैठते, सदा चलते ही रहते हैं। पृथ्वी और नारी क्षमतावान हैं। वे सबको क्षमा कर देती हैं। गरीब दो हैं। एक तो बकरी और दूसरी लड़की। उनके साथ चाहे जैसा बर्ताव किया जा सकता है। मूरख मेरा पति और आप हैं। एक ने बिना कुछ पूछे-ताछे बटोहियों को पीटना शुरू कर दिया, दूसरे ने बिना जांच-पड़ताल किये उन्हें हिरासत में ले लिया। मैं तो इन्हें अपना अतिथि बनाकर लिये जा रही थी।"

दारोगा ने पूछा, "अच्छा, यह बताओ कि अतिथि किसे कहते हैं ?"

स्त्री ने कहा, "जिसके न आने की तिथि हो, न जाने की।"

यह सुनकर दारोगा बहुत खुश हुआ। उसने उन सबको छोड़ दिया और उस स्त्री से अपनी गलती के लिए माफ़ी मांगी। □

गुरु दक्षिणा

एक नाई था। उसके एक भैंस थी। वह उसे रोज पोखर पर ले जाकर स्नान करवाता था। एक दिन जब वह उसे मलमल कर नहला रहा था तो उसने देखा कि किनारे पर एक बाबाजी ने तीस अशर्फियां गिनकर बटुए में रक्खीं और उसे अपने जटा-जूट में छिपाकर बांध लिया।

जल्दी से नाई घर आया और अपनी भैंस बांधकर वह बाबाजी के पास पहुंचा। बाबाजी को दंडवत करके उसने कहा, "बाबाजी, आज शाम को मुझ गरीब के घर आपके चरण पड़ें तो मैं निहाल हो जाऊं। अबतक न तो मुझे कोई गुरु मिला है, न मेरी घरवाली को। सो मुझे अपना शिष्य बनाकर मेरा यह

चोला सफल कर दीजिये। हम दोनों आपका चरणोदक पाकर धन्य हो जायंगे।"

बाबाजी बोले, "बच्चा, अगर तू मुझे दक्षिणा में दो अशर्फियां देने को तैयार हो तो मैं तुझे अपना शिष्य बना सकता हूं।"

नाई बहुत ही नरमाई से बोला, "बाबा, मुझे मंजूर है। मेरे ऐसे भाग्य कहां कि जो आप जैसे महात्मा की कृपा मुझे मिले ! आपके चरण-कमल की दया होगी तो दो अशर्फियां कौन बड़ी बात है।"

इतना कहकर नाई ने बाबाजी का झोला अपने कंधे पर डाला और चल दिया। बाबाजी खड़ाऊं की खट-खट करते हुए उसके पीछे चले।

घर पहुंचने पर नाई और नाइन ने बड़ी भक्ति से बाबा के पैर थाली में रखकर धोये। भोजन में नाना प्रकार की चीजें परोसीं।

भोजन के बाद बाबा चारपाई पर लेटे। नाई उनके पैर दबाने लगा। शिष्य की भक्ति देखकर बाबा बहुत खुश हुए। रातभर गहरी नींद सोये।

सुबह निबटकर जब बाबा चलने लगे तो उन्होंने अपनी दक्षिणा मांगी। नाई ने नाइन को सन्दूक की चाबी देते हुए कहा, "सन्दूक में तीस अशर्फियां रक्खी हुई हैं। जा, उनमें से दो लाकर गुरु-महाराज को दे दे। फिर पैर छूकर आशीर्वाद ले। अगर गुरु महाराज की कृपा हुई तो तेरी गोद सूनी नहीं रहेगी।"

नाइन चाबी लेकर गई और सन्दूक खोला, पर चारों ओर

ढूंढ़ने पर भी अशर्फियां नहीं मिलीं। उसने आकर यही बात कह दी।

नाई ने नाइन पर बिगड़ते हुए कहा, "क्या कहती है तू! अशर्फियां नहीं हैं तो कहां गईं। उड़ गईं? मैंने आप एक-एक करके गिनकर रक्खी हैं।"

नाई खुद गया और थोड़ी देर बाद सन्दूक में ढूंढ़-ढांढ़कर झल्लाता हुआ आया और नाइन पर बरस पड़ा, "अशर्फियां सन्दूक में थीं। हमने अपने हाथ से रक्खी थीं। यह सब तेरी करतूत है। तूने ही उन्हें कहीं छिपाकर रक्खा है। मौका मिलने पर अपने भाई-बाप को दे देगी। तेरी खानातलाशी ली जायगी।"

इतना कहकर उसने नाइन की तलाशी ले डाली, लेकिन अशर्फियां नहीं मिलीं।

तब नाई ने नाइन से कहा, "तू समझती होगी कि मैंने उन्हें कहीं रख लिया है। अच्छा, तू मेरी तलाशी ले ले।"

नाइन ने नाई की तलाशी ली, पर अशर्फियां नहीं निकलीं।

तब नाई ने बाबाजी से कहा, "महाराज, मेरी यह नाइन बड़े शक्की मिजाज की है। इसलिए आप भी अपनी खाना-तलाशी दे दीजिए, जिससे इसका शक मिट जाय।"

बाबाजी तुरन्त खड़े हो गये और बोले, "अरे, इसमें कौन-सी बात है! जरूर मेरी भी तलाशी ले लो।" कहते-कहते बाबाजी ने अपनी लंगोटी और कोपीन हिला कर दिखा दी।

नाई ने कहा, "महाराज, जटाजूट रह गए। उन्हें भी दिखा दीजिए। यह नाइन बड़े खोटे दिल की है।"

बाबाजी पहले तो हिचकिचाये, पर कर क्या सकते थे!

लाचार होकर उन्हें जटाजूट खोलने पड़े। खोलते ही बटुआ सहित अशर्फियां निकल आईं।

नाई बोला, "देखा, महाराज में कितना सत्त है, खोई हुई अशर्फियां उन्होंने वापस बुला दीं। वाह महाराज वाह! (स्त्री से) अच्छा, ले गिन ले, पूरी न निकलें तो मुझसे कहना! उनमें से दो महाराज के चरणों में चढ़ा दे और आशीर्वाद मांग कि तेरी सूनी गोद भर जाय।"

नाइन ने एक-एक करके अशर्फियां गिनीं तो सचमुच तीस निकलीं। उसने दो महाराज के चरणों में रख दीं।

नाई ने हाथ जोड़ते हुए कहा, "महाराज, आपने मेरी जान बचा ली। अब कभी इधर पधारें तो सेवक को न भूलिए।"

अपना हारा और स्त्री का मारा आदमी कुछ नहीं बोलता, सो साधु बाबा चुप रहे। फिर जाते-जाते बोले, "बच्चा, खुश रहो। आदमियों में नौआ से और पंछियों में कौआ से सदा होशियार रहना चाहिए।" □

सबसे बड़ा मूर्ख

चार मित्र कहीं जा रहे थे। चलते-चलते थक गये तो अपनी थकान मिटाने के लिए एक पीपल के पेड़ की छाया में बैठ गये। चारों दोस्त चार जाति के थे—एक ब्राह्मण, दूसरा क्षत्रिय, तीसरा वैश्य और चौथा कायस्थ।

बाद में एक और आदमी पेड़ की छाया में सुस्ताने आया। चारों दोस्तों को देखकर उसने झुककर सलाम किया।

उसके सलाम से चारों दोस्तों में खटपट शुरू हो गई। मुंशीजी (कायस्थ) बोले, "इसने मुझे सलाम किया है।"

पंडितजी बोले, "नहीं, मुझे किया है।"

सिंहजी बोले, "जी नहीं, मुझे किया है।"

साहजी भला क्यों चुप रहते! वह बोले, "अरे भाई, अगर सच मानो तो उसने इकट्ठे सबको सलाम किया है। नहीं विश्वास होता है तो पूछ लो उससे। हाथ कंगन को आरसी क्या!"

सिंहजी तपाक से बोले, "चल हट, बड़ा आया अपने को सलाम करवाने! हम राजपूत हैं। सलामी लेने का खानदानी अधिकार मेरा है, न कि तेरा।"

इस तरह बात बढ़ गई और जब आपस का झगड़ा आपस में नहीं निबट सका तो सबने उस आदमी से पूछा, "क्योंजी, तुमने हम लोगों में से किसको सलाम किया है?"

वह समझ गया कि हो-न-हो, ये चारों मूरख हैं। जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। वह बोला, "तुम लोगों में जो सबसे बड़ा मूरख होगा, उसीको सलाम किया है। सब अपना-अपना प्रमाण दो।" फिर क्या था! उसकी बात सुनते ही सब अपनी-अपनी मूर्खता की बात सुनाने के लिए उतावले हो उठे।

पंडितजी ने अपनी पगड़ी ठीक की, बोले, "पहले मेरी सुनो। भादों की अंधियारी रात थी। पंडिताइन अपने बाल-बच्चों को लेकर नैहर चली गई थीं। मैं अकेला था। आधी रात को सेंध लगाकर चोर घर में घुस आया। आहट पाकर मैं जाग गया। हल्ला करने ही वाला था कि याद आया, जरा पत्रा में मुहुर्त्त देख लूं तो अच्छा रहेगा। सो पत्रा निकाल कर देखा तो मुहूर्त्त पूरनमासी की रात का निकला। उस समय बहुत ही अशुभ

बड़ी थी। इसलिए हाथ मलकर चुप रह गया।

पूरनमासी की रात आई। आसमान साफ था। चांद हँस रहा था। १ बजकर १४ पल पर हल्ला करने का मुहूर्त्त था। सो ठीक समय पर बाहर निकलकर मैंने हल्ला करना शुरू किया —चोर...चोर...

शोर सुनकर पास-पड़ोस के लोग दौड़े आये। संयोग से उसी समय एक आदमी शहर में कमाई करके घर लौट रहा था। लोगों की मदद से उसीको पकड़कर हवालात में बन्द कर दिया गया। उस बेचारे ने अपनी लाख सफाई दी, पर किसीने न सुनी।

सबेरे राजा के दरबार में हम सबको ले जाया गया।

राजा ने सब हाल सुनकर पूछा, "क्या यही चोर है ? मैंने समर्थन किया कि "जी हां, यही चोर है।"

राजा ने पूछा, "चोरी कब हुई ?"

मैंने कहा, "चोरी तो आज से कोई आठ-नौ दिन पहले हुई थी। मेरा सारा सामान चला गया।"

राजा ने पूछा, "तो आज इतने दिन बाद पूरनमासी की रात को हल्ला क्यों किया ?"

मैंने कहा, "महाराज, पत्रे में हल्ला मचाने का मुहूर्त्त पूरनमासी की रात का ही निकला था।"

यह सुनकर राजा को बहुत गुस्सा आया। बोला, "निकल जा मूरख यहां से !"

सो राजा साहब से मुझे यह प्रमाण-पत्र मिला है। भरोसा न हो तो चलकर राजा से पूछ लो कि मैं सबसे बड़ा मूरख हूं कि नहीं।"

अब साहजी की बारी आई। बोले, "अरे भाई, हमसे ज्यादा मूरख तुम क्या होगे ? दिवाली की रात की बात है। लक्ष्मी पूजा करके सारी जमा-पूंजी थाली में रखकर मैं अपनी स्त्री के साथ बैठा था। विचार आया कि आज साल भर का पर्व है। दिवाली की रात को हार-जीत जरूर करनी चाहिए। इसीसे पता चल जायगा कि साल-भर घाटे में रहूंगा या मुनाफे में। स्त्री से मैंने यह बात कही तो वह बोली, "इतनी रात गये अब कहां जाओगे ? मेरे साथ ही हार जीत कर देखो।"

इसके बाद हम दोनों ने हाथ-से-हाथ मिलाकर बाजी लगाई कि जो पहले बोले सो हारे। बात पक्की हुई और चुपचाप जाकर गुदगुदे पलंग पर लेट गये।

आधी रात बीती कि घर में चोर घुस आया। हम दोनों जाग रहे थे। पर बोले कौन ? जो बोले सो हारे। कोई नहीं बोला और चोर घर का सारा सामान लेकर चला गया।

चोर लालची था। थोड़ी देर बाद फिर लौटा। तब भी हम दोनों जाग रहे थे। किन्तु बोले कौन ? इस बार चोर के लिए कुछ भी न बचा था। उसने मेरे कपड़े समेटे। फिर भी मैं नहीं बोला आगे बढ़कर उसने मेरी स्त्री की गर्दन पर हाथ लगाया और हंसुली खींचने लगा। तब भी मैं चुप रहा। लेकिन स्त्री से न रहा गया। वह चिल्लाई, "अब तो बोलो और हल्ला करो, नहीं तो मेरी इज्जत ही लुटी जा रही है।"

मैंने कहा, "तुम हार गईं। बोलो, है न मंजूर ?"

स्त्री बोली, "हार-जीत जाय भाड़-चूल्हे में। मेरा तो घर लुट गया और इज्जत-आबरू पर आ बनी।"

अब हम दोनों इसी बात पर झगड़ने लगे। हल्ला-गुल्ला

सुनकर अड़ोस-पड़ोस के लोग आ गये। कारण जानने पर सब छीः-छीः करने लगे और बोले, "तुम अव्वल दर्जे के मूरख हो। घर लुट गया और तुम दोनों देखते रहे!"

अब बताओ, तुम बड़े या मैं?

इतना सुनकर सिंहजी बोले, "अच्छी कही तुम लोगों ने। अरे, तुम दोनों से तो मैं कहीं बढ़-चढ़कर हूं। लो सुनो। एक दिन की बात है। मैं अपने दालान में बैठा हुक्का पी रहा था। उधर से एक काबुली कुछ कम्बल लिये हैदल बछेड़ी पर चढ़कर चला जा रहा था। घोड़ी मुझे जंच गई। मैंने रोककर पूछा, "घोड़ी बेचोगे?"

काबुली बोला, "बेचूंगा, पर तुम उसका दाम नहीं दे सकते। कोई राजा ही यह घोड़ी खरीद सकता है।"

मैंने कहा, "कीमत बताओ।"

काबुली ने हजार रुपये बताये। मैंने कहा, "ठीक है।" घोड़ी को खूंटे से बंधवाया। सन्दूक में पांच सौ रुपये थे, सो गिन दिये। बाकी के रुपये के लिए कहा कि तुम कम्बल बेचो। जाते समय लेते जाना।

काबुली चला गया।

दो दिन के बाद वह कम्बल बेचकर लौटा। मैंने गांव के साहूकारों से एक आना महीने ब्याज पर चार सौ रुपये उधार लिये और उसे दे दिये। बाकी के सौ के लिए काबुली से एक हफ्ते की मोहलत मांगी। काबुली ने अपनी दोनों आंखें बन्द कर लीं और एक क्षण के बाद उन्हें खोलकर बोला, "सिंहजी एक हफ्ता हो गया। लाओ रुपये।" बहुत कोशिश करने पर भी रुपये न चुका सका तो करार के मुताबिक सौ रुपये में वही

घोड़ी फिर काबुली के हाथ वेचकर उसके पूरे रुपये चुका दिये।

अब बोलो, मैं बड़ा मूरख या तुम लोग ?"

इसके बाद मुंशीजी ने मुंह खोला, बोले, "तुम सब तो अपनी-अपनी कह चुके। मुझे अपनी कहने में थोड़ा संकोच मालूम होता है और मैं स्वयं यह तय नहीं कर पा सका हूं कि मैंने जो काम किया है, वह सही था या मूर्खता-पूर्ण। बरसात का मौसम था। नदी-नाले भरे हुए थे। अचानक ससुराल से खबर आई कि सास बहुत बीमार है। बचने की कोई उम्मीद नहीं है। मुंह देखना हो तो फौरन चले आओ। सो मैं अपनी घरवाली और बाल-बच्चों को लेकर ससुराल के लिए रवाना हुआ। रास्ते में नदी पड़ी। स्त्री बोली, "घाट देख लो। वहां नाव मिल जायगी।"

मैंने कहा, "क्या नासमझी की बातें करती हो! नाववाले को खोजो, उसकी खुशामद करो, तब पार उतरो। उसकी जरूरत क्या है? मैं पैमाइश करना जानता हूं। लो, अभी बतला देता हूं कि नदी में कितना पानी है। अगर ज्यादा पानी न हुआ तो हम लोग बिना नाव के पार उतर जायंगे।"

मैं नदी में उतरा। पैर डूबे, फिर घुटने तक पानी आया, फिर जांघ तक, आगे कमर तक और उससे आगे छाती तक। हिसाब जोड़कर औसत निकाला तो घुटने भर से थोड़ा ऊपर पानी का औसत बैठा।

अपनी स्त्री से मैंने कहा, "कोई बात नहीं है। पानी ज्यादा नहीं है घुटने से थोड़ा ऊपर है। हम लोग मजे में पार उतर जायंगे। बच्चों को भी दिक्कत नहीं होगी।"

स्त्री की समझ में मेरा हिसाब नहीं आया। मुझे गुस्सा आ

गया। मेरे हिसाब और गिनती का औसत कचहरी तक में माना जाता है। कभी कोई काट नहीं सका। यह चूल्हा फूंकनेवाली औरत मुझे गलत ठहरा रही है ! ज़ोर-से डपटकर मैंने सबको आने के लिए कहा। आगे-आगे आप चल दिया। बीच धारा में पहुंचते-पहुंचते बच्चे डूबने लगे। मेरी स्त्री उन्हें बचाने में खुद बह गई। मैं बेफिकर था कि मेरा हिसाब गलत नहीं हो सकता था। पर जब मैंने देखा कि वे सब गायब हैं तो मेरी समझ में नहीं आया कि वे सब कैसे बह गये। मैंने पानी को फिर से नाप कर देखा तो औसत पहले जितना ही आया। मेरे सामने आज भी समस्या है कि :

लेखा-जोखा ज्यों-का-त्यों ।
लड़का-लड़की डूबे क्यों ?

सबकी बातें सुनकर वह आदमी मुस्कराता हुआ बोला, "सबसे बड़े मूरख मुंशीजी हैं। तुम तीनों ने तो धन ही खोया, इन्होंने तो बाल-बच्चों को ही डुबो दिया। ऐसे आदमी को कौन हाथ नहीं जोड़ेगा !" □

चिड़ियारानी

एक राजा था। उसके राज्य में प्रजा को हर तरह का आराम था। वह सुख से अपना जीवन व्यतीत करती थी। उसे किसी बात का कष्ट न था। लेकिन राजा के कोई सन्तान न थी। इससे राजा और प्रजा सभी दुःखी रहते थे। सन्तान न होने के कारण लोग सोचा करते थे कि राजा के बाद गद्दी पर कौन बैठेगा ? इसलिए सब भगवान से प्रार्थना किया करते थे कि राजा के अधिक नहीं तो कम-से-कम एक कन्या तो हो ही जाय।

एक दिन रानी अपने महल में बैठी सोच रही थी कि संतान कैसे हो, अचानक उसके मन में विचार उठा कि एक सुन्दर चिड़िया को अपने पास पिंजड़े में रख लूं और किसी दिन

दासियों से राजा को कहलवा दूं कि मेरे बच्चा पैदा होनेवाला है। आगे जो होगा सो देखा जायगा। कुछ दिन के लिए तो राजा और प्रजा सुखी हो ही जायंगे।

यह सोच रानी ने दासियों को बुलाकर कहा कि मेरे लिए कहीं से एक सुन्दर चिड़िया ले आओ। मैं उसे अपने पास छिपाकर रक्खूंगी। राजा से मत कहना।

रानी के आज्ञा देते ही पिंजड़े में बन्द एक सुन्दर चिड़िया उसके पास आ गई। इसके बाद मौका पाकर रानी ने एक दिन राजा से कहलवा दिया कि रानी गर्भवती है। यह सुनकर राजा बहुत ही खुश हुए। बात की बात में यह समाचार सारे नगर में फैल गया। प्रजा की खुशी का ठिकाना न रहा।

छः महीने के बाद बड़ी धूमधाम से रानी की गोद भरी गई। जब नौवां महीना पूरा हुआ तो दासियों ने राजा को खबर दी कि रानी के एक सुन्दर राजकुमारी पैदा हुई है। सारे राज्य में खुशियां मनाई गईं।

एक दिन राजा रानी से मिलने आये। बोले, "रानी, राजकुमारी को मुझे दिखा दो।"

रानी ने कहा, "महाराज धीरज रखिये। मैं अभी राजकुमारी को नहीं दिखाऊंगी। जब दष्टौन हो जायगा तब दिखा दूंगी।"

दष्टौन हो गया तो राजा ने फिर इच्छा की, पर रानी बोली, "अभी नहीं। मुंडन के समय दिखाऊंगी।"

कुछ दिनों के बाद मुंडन भी हो गया। राजा ने फिर कहा तो रानी बोली, "अभी नहीं। जब राजकुमारी का कनछेदन होगा, तब देख लीजियेगा।"

कुछ दिनों के वाद कनछेदन भी हो गया । राजा ने वड़ी उतावली से कहा, "रानी, अव तो राजकुमारी को मुझे दिखा दो ।"

रानी ने जवाब दिया, "जव राजकुमारी की सगाई होगी, तव देख लीजियेगा ।"

दिन जाते देर नहीं लगती । धीरे-धीरे पन्द्रह वरस वीत गये । एक दिन रानी ने राजा से कहा, "महाराज, अव राजकुमारी शादी के योग्य हो गई है । उसके लिए योग्य वर की तलाश करवाइये और शादी कर दीजिये ।"

राजा वोले, "अच्छा ।"

रानी की इच्छानुसार राजा पगड़ी वांधकर दूर-दूर के देशों में जाकर अच्छे राजकुमार की तलाश करने लगे । पर कहीं योग्य वर न मिला । निराश होकर लौट आये ।

दुर्भाग्य से वर की खोज में राजा की टांग टूट गई । वड़ी मुश्किल से वह ठीक हुई । उसके वाद राजा ने फिर वर की खोज शुरू की । वहुत हैरान होनेपर एक नगर में राजा की पसंद का राजकुमार मिल गया । वह राजकुमारी की सगाई करके वापस लौट आये । महल में आकर राजा ने रानी से कहा, "रानी, अब तो राजकुमारी की सगाई पक्की हो गई । उसे मुझे दिखा दो ।"

रानी ने कहा, "अभी नहीं । जब इतने दिनों तक आपने सब्र किया है तो थोड़ा और ठहर जाइये । जब बेटी की भांवर पड़ेगी तब देख लीजियेगा ।"

शुभ लग्न देखकर व्याह की तिथि तय की गई । समय पर वारात आई । बड़ी अच्छी तरह से विधियां हुईं । किन्तु जव

भांवर पड़ने का समय आया तब लड़केवालों ने कहा, "दुलहिन को बुलाओ।" रानी को खबर की गई तो उन्होंने कहलवा भेजा कि हमारे यहां राजकुमारियों की भांवर डोली से पड़ती है।

उसी तरह भावरें पड़ गईं।

भांवरें पड़ जाने पर राजा ने कहा, "रानी अब तो राजकुमारी को दिखा दो।"

रानी बोली, "अभी नहीं, जब आप उसे लिवाने जाइयेगा तो देख लीजियेगा।"

इस तरह चिड़िया का व्याह बड़ी धूम-धाम से हो गया। जब बारात विदा होने का समय आया तो एक डोली में चिड़िया का पिंजड़ा रख दिया गया और दूसरी में राजकुमार को बैठा दिया गया। जब वे लोग नगर से बाहर आ गये तो राजकुमार अपनी डोली से उतरकर राजकुमारी की डोली में गये। वहां वह देखते क्या हैं कि चिड़िया का पिंजड़ा रक्खा है। राजकुमार को बड़ी हैरानी हुई, पर वह कर क्या सकता था!

बारात घर पहुंची। राजकुमार की माता ने परछन करना चाहा तो राजकुमार ने रोक दिया। कहा, "मां, अभी परछन नहीं होगा, जब छोटे भाई की शादी होगी तब हम दोनों भाइयों का परछन एक साथ हो जायगा।"

राजकुमार ने पिंजड़े को लेकर अपने महल में टांग दिया और चिड़िया को नियमित दाना-पानी देने लगा।

कुछ दिन बाद छोटे राजकुमार का व्याह निश्चित हो गया। शादी के थोड़े दिन रह गये। मां ने राजकुमार से कहा,

"बेटा, जब से तुम्हारी शादी हुई है, तव से दुलहिन को हवेली के अन्दर ही बैठाये रखते हो। घर का काम-काज कैसे चलेगा ? अनाज साफ होना है, दाल तैयार होनी है। अकेली मैं क्या-क्या कर लूंगी !"

यह सुनकर राजकुमार अपने कमरे में चला आया और माथे पर हाथ रखकर वैठ गया। चिड़िया अव तक चुप रहती थी। राजकुमार को इस प्रकार चिन्तित देखकर उससे न रहा गया। वोली, "क्यों, क्या बात है ? आप उदास क्यों हैं ?"

चिड़िया को बोलते देखकर राजकुमार को वड़ा अचरज हुआ। उसने कहा, "क्या कहूं ! घर में शादी है। मां कहती है कि तुम्हारी बहू दाल दलने, कूटने-पीसने के किसी काम में हाथ नहीं बंटाती।"

यह सुनकर चिड़िया हँसकर वोली, "वस इतनी-सी वात के लिए आप चिंतित हैं। आप जाकर मां में कह दीजिये कि अनाज-दाल जो भी ठीक कराना हो, आंगन में रखवा दें। सव ठीक हो जायगा।"

यह सुनकर राजकुमार हँसी-खुशी मां के पास गया। मां ने कहा, "वेटा, धान कूटना है। बताओ, कौन कूटे !"

राजकुमार बोला, "मां जितना धान कुटवाना हो आंगन में रखवा दो। रात-भर में सव कुटकर तैयार हो जायगा।"

मां ने कहा, "अच्छा।"

रात को रानी ने पांच मन धान राजकुमार के आंगन में डलवा दिया और सोने चली गईं। राजकुमार चिड़िया के पास गया और उससे वोला, "पांच मन धान मां ने कुटवाने के लिए आंगन में रखवा दिया है।"

इतना सुनते ही चिड़िया फुर्र से पिंजड़े से उड़ी और थोड़ी देर में बहुत-सी चिड़ियों को इक्ट्ठा कर लाई। देखते-देखते सारी चिड़ियों ने धान को अपनी चोंच से साफ करके चावल एक तरफ और भूसी दूसरी तरफ निकालकर रख दी। काम निबट जाने पर वे एक-एक करके उड़ गईं और राजकुमार की चिड़िया पिंजड़े में आकर बैठ गई।

जब राजकुमार की मां सवेरे उठीं और उन्होंने कुटे चावलों का ढेर देखा तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। बोलीं, "वाह, कितने अच्छे चावल कुटे हैं! भूसी एकदम साफ। एक दाना तक नहीं टूटा।"

वह मन-ही-मन सोचने लगी कि राजकुमार की बहू कितना अच्छा काम करती है। वह जरूर बहुत सुन्दर होगी। यही वजह है कि राजकुमार उसे किसी को देखने नहीं देता। कहीं नजर न लग जाय।

अगले दिन रानी ने राजकुमार से कहा, "आज दाल दलनी है।"

यह सुनकर राजकुमार पहले की तरह सोच में पड़कर अपने कमरे में सुस्त होकर बैठ गया। उसे चिन्तित देखकर चिड़िया ने पूछा, "क्यों, क्या बात है?"

राजकुमार बोला, "आज मां ने दाल दलने के लिए कहा है।"

चिड़िया ने कहा, "बस, इतनी-सी बात के लिए आप चिन्ता में पड़ गये। जाकर माताजी से कहिये कि जितनी दाल दलवानी हो, भिजवा दें।"

राजकुमार ने यही बात जाकर रानी से कह दी। रानी ने

शाम को उड़द आंगन में रखवा दिये और दाल दलने की सभी चीजें, चक्की, सूप आदि अपने पास रखकर वह सो गईं। उन्होंने सोचा कि जब वहू उन चीजों को उठाने आवेगी तब मैं उसे चुपके से देख लूंगी।

पहले की तरह रात को चिड़िया अपने पिंजड़े से निकली और जरा-सी देर में चिड़ियों की पलटन इकट्ठी कर ली। चिड़ियों ने मिलकर अपनी चोंच से उड़द के छिलके अलग करके दाल एक तरफ और छिलके दूसरी तरफ कर दिये। इस प्रकार दाल तैयार करके सारी चिड़ियां उड़ गईं। राजकुमार की चिड़िया अपने पिंजड़े में आ गई।

अगले दिन रानी ने दाल दली हुई देखी तो विस्मय में रह गईं। सारा सामान ज्यों-का-त्यों रक्खा रहा और काम पूरा हो गया। राजकुमार की वारात जाने के दिन पास आये तो बड़े राजकुमार को बड़ी चिन्ता हुई। वह अपने कमरे में उदास होकर बैठ गया। चिड़िया ने उसे हैरान देखा तो बोली, "क्यों, आप चिन्तित क्यों हैं ? जो बात हो, मुझसे कहिये। मैं उसे पूरा करने की कोशिश करूंगी।"

राजकुमार ने कहा, "मुझे वारात में जाना पड़ेगा। चार दिन लगेंगे। इस बीच तुमको चारा-दाना कौन देगा ?"

चिड़िया बोली, "इसमें परेशान होने की क्या वात है ! मेरे पिंजड़े में थोड़ा दाना और एक डव्वा पानी रख दीजिए। मैं उतने में ही दिन काट लूंगी।"

राजकुमार ने ऐसा ही किया और वारात में चला गया।

संयोग की वात कि एक दिन चिड़िया पानी पीने के लिए पानी के डिब्बे पर बैठी कि डव्वा उलट गया और सारा पानी

गिर गया। अब वह प्यास के मारे फड़फड़ाने लगी। गला सूख गया। प्राण संकट में पड़ गये। चिड़िया को एक तरकीब सूझी उसने डिब्बे में डोरी बांधकर उसे अपने गले में लटका लिया और पिंजड़े के छेद से निकलकर कुएं पर पहुंची। जब वह पानी पीने के लिए अंदर गई तो बड़ी कठिनाई आई। वह पानी में डुबकी लगाती थी तो उसका डब्बा पानी पर उतराता था और जब डब्बा डूबता था तो वह उतराती थी। इस तरह उसने कई बार पानी पीने और डब्बे में भरने का प्रयत्न किया, पर उसे सफलता नहीं मिली।

रात बीतने को आई, पर चिड़िया प्यासी-की-प्यासी रही। भाग्य से सबेरा होने से पहले शिव-पार्वती उस रास्ते से गुजरे। चिड़िया की हैरानी देखकर पार्वती को बड़ी दया आई। उन्होंने शिवजी से कहा, "हाय, देखो तो इस चिड़िया को कितना कष्ट हो रहा है। इस बेचारी का उद्धार कर दीजिये।"

पार्वती की बात सुनकर शिवजी बोले, "हमें स्त्रियों की यही सब बातें अच्छी नहीं लगतीं। यह संसार है, यहां नाना तरह से लोग दुःख-सुख भोगते हैं। जिसके भाग में जितना लिखा है, वह उतना पाता है।"

पार्वती बोली, "चाहे जो हो, लेकिन इस चिड़िया का तो उद्धार आपको करना ही होगा।"

पार्वती की हठ देखकर शिवजी ने तुरंत अपने बाएं हाथ की छोटी अंगुली चीरकर चिड़िया की देह पर लहू छिड़क दिया। लहू की बूंद गिरनी थी कि वह रूपवती कन्या बन गई।

उसने शिवजी से प्रार्थना की, "जब आपने मुझपर इतनी कृपा की है तो मुझे मेरे घर तक पहुंचा दीजिये।"

कन्या की विनती सुनकर शिव-पार्वती उसे उसके घर पर पहुंचाकर अन्तर्धान हो गये।

बारात लौटी। राजकुमार बड़ी उतावली से अपने कमरे में गया तो देखता क्या है कि चिड़िया की जगह एक सुन्दर राजकुमारी खड़ी है। राजकुमार को बड़ा क्रोध आया और वह अपनी तलवार निकालकर उसे मारने दौड़ा।

राजकुमारी ने हाथ जोड़कर कहा, "अभी मुझे मत मारिये। जो हुआ है वह सुन लीजिये। फिर आपकी जैसी मरजी हो, वैसा कीजिये।"

इसके बाद चिड़िया ने सब हाल कह-सुनाया।

सुनते ही राजकुमार बहुत प्रसन्न हुआ और राजकुमारी को छाती से लगा लिया। फिर क्या था! वह उसे लेकर रानी के पास गया। राजकुमारी चलती थी तो चन्दन के पैर के निशान धरती पर पड़ते थे और जब हँसती थी तो मोती झड़ते थे।

यह सब देखकर रानी ने राजकुमार से कहा, "अब समझी कि तुम बहू को क्यों नहीं दिखाते थे।"

कुछ दिनों के बाद राजकुमारी के पिता उसे विदा कराने आये। जब उन्होंने राजकुमारी को देखा तो फूले न समाये। बड़ी हँसी-खुशी के साथ वह उसे विदा कराकर ले गये।

जब रानी ने अपनी बेटी को देखा और सारा हाल सुना तो उनकी भी खुशी का ठिकाना न रहा।

उस दिन से सब अच्छी तरह रहने लगे। □

बहू की करामात
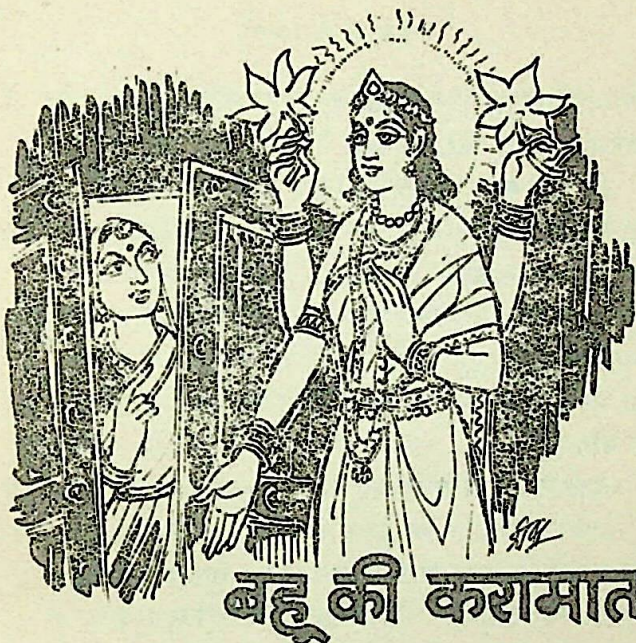
किसी गांव में एक ब्राह्मण रहता था। वह बड़ा गरीब था।

उसके दो बेटियां थीं। संयोग से बड़ी बेटी का ब्याह पैसे वाले के यहां हुआ था और छोटी गरीब घर में व्याही थी। जब छोटी बेटी ससुराल जाने लगी तो उसकी मां सोचने लगी कि कोई ऐसा उपाय होना चाहिए, जिससे वह वहां कुछ दिन तो सुख से बिता सके फिर उसके भाग्य में जो बदा है, वह तो होगा ही। मां के पास सोने का एक करनफूल था, जिसे वह बहुत दिनों से छिपाकर रक्खे हुए थी। मां ने सोच-विचारकर वह करनफूल निकाला और विदाई के समय जब बेटी का जूड़ा बांधा गया तो चुपचाप वह करनफूल उसमें लगा दिया। जूड़ा

बंधने पर बेटी का हाथ सहसा करनफूल पर जा पड़ा। बेटी ने अचरज से कहा, "मां, यह क्या ?"

प्यार से मां बोली, "बेटी, तेरी मां के पास यही है। ससु-राल जाकर तू इसको बेच डालना और कुछ दिनों तक अच्छे खाने-पीने की व्यवस्था कर लेना।"

"जब वह पैसा खत्म हो जायगा तब क्या होगा ?" बेटी ने तपाक से पूछा !

मां ने धीमे स्वर में कहा, "फिर जो भाग्य में लिखा होगा, वह भोगना।"

बेटी ने जूड़े में से करनफूल निकालकर मां को देते हुए कहा, "तो अभी से भाग्य का सामना क्यों न करूं, मां ? भग-वान न करें कि ऐसा हो; लेकिन अगर तुम पर मुसीबत आ पड़ी तो क्या करोगी ? मैं यह करनफूल नहीं लूंगी।"

इसके बाद लड़की अपनी ससुराल चली गई। उसके पति चार भाई थे। सबके अलग-अलग चूल्हे थे। लड़की ने ससुराल पहुंचते ही अपने पति से कहा, "एक ही घर में चार चूल्हे जलते हैं, अलग-अलग हांडी में नमक डाले जाते हैं। अगर सब मिल-कर रहें तो बहुत-सा खर्च बच जायगा।"

पति ने भाइयों से बात की तो उन्हें बहू की सलाह बड़ी अच्छी लगी। सब एक परिवार में मिल-जुलकर रहने लगे। लेकिन गरीबी के पैर उस घर में ऐसे जमे थे कि खर्च में कमी हो जाने पर भी कठिनाई कम न हुई। तब बहू ने सबके सामने एक और बात रक्खी। उसने कहा, "सारे गांव वालों से कहो कि वे अपने-अपने घरों का एक दिन का सारा कूड़ा-करकट झाड़-बुहारकर हमारे दरवाजे के पास ढेर लगा दें।"

"यह तो कोई बड़ी बात नहीं। कूड़ा डालने में क्या लगता है। पर उससे होगा क्या ?" उन्होंने पूछा।

"आप लोग ऐसा करावें तो सही।" वहू ने आग्रह किया।

"अच्छी वात है।" भाइयों ने कहा। सारे गांव में घूम-घूमकर उन्होंने लोगों से प्रार्थना की और एक दिन का कूड़ा अपने घर के सामने डाल देने पर उन्हें राजी कर लिया। निश्चित दिन उनके दरवाजे के सामने कूड़े का ढेर लग गया। किसीके घर उस दिन काला सांप निकला था। उसने सांप को मारकर भी कूड़े के साथ डाल दिया।

उसी गांव में एक साहूकार रहता था। उसकी स्त्री को गहनों का वड़ा शौक था। गहनों में उसे सबसे ज्यादा चन्द्रहार प्यारा था। नहाते समय वह उसे उतारकर गुसलखाने की ताक में रख दिया करती थी। एक दिन वह उसे वहीं रक्खा भूल गई। अकस्मात एक चील उड़कर वहां आई और उसे मांस का टुकड़ा समझकर उड़ा ले गई। उड़ते-उड़ते ब्राह्मण-भाइयों के दरवाजे के सामने कूड़े के ढेर पर पड़े सांप पर उसकी निगाह गई। वह सांप को पकड़ने के लिए ढेर पर उतरी और हार को वहीं छोड़ सांप को ले गई।

दिन चढ़ने पर चारों भाइयों ने उस कूड़े के ढेर पर चन्द्र-हार पड़ा देखा। मारे ख़ुशी के वे उछलने लगे। मन-ही-मन वोले, "भगवान देते हैं तो छप्पर फाड़कर देते हैं।"

इसके वाद उन्होंने वह हार ले जाकर बहू को दिखलाया। मगर वहू उसे देखकर गंभीर हो गई। वोली, "यह हार किसी दूसरे का है। कूड़े के साथ भूल से चला आया है। इसे जतन से रखना चाहिए और पता लगाकर जिसका हो उसे दे देना

चाहिए। हमारे लिए तो यह कूड़े के समान है।"

इतना कहकर उसने हार को संभालकर रख लिया।

उधर साहूकार की स्त्री को जब हार की याद आई तो उसने गुसलखाने में जाकर देखा। पर वह वहां होता तो मिलता। घर का कोना-कोना छान डाला, पर हार न मिला।

फौरन गांव में ढिंढोरा पिटवाया गया कि जो हार खोज-कर साहूकार को देगा, उसें मुंहमांगा इनाम मिलेगा।

बहू ने जब ढिंढोरे की बात सुनी, पीतल की थाली में हार को सजाकर वह साहूकार के पास गई। साहूकार हार पाकर बहुत खुश हुआ। उसने पूछा, "बोलो, क्या इनाम चाहिए ?"

बहू ने कहा, "वचन दीजिये तो बताऊं।"

साहूकार ने तीन बार वचन हारते हुए कहा, "एक सत्, दोसर सत्, तीसर सत्, हारूं तो ब्रह्मा-विष्णु के नरक में जाऊं।"

बहू बोलीं, "अच्छा, दीवाली की रात को मेरे घर के सिवाय और किसी के घर दीये न जलाये जायं।"

साहूकार तीन बार वचन हार चुका था। उसे बड़ा बुरा लगा, पर बात निभानी पड़ी। उसने गांवभर में ढोल पिटवा दीया कि दीवाली के दिन कोई भी अपने घर दीया न जलावे।

दीवाली आई। ब्राह्मण-भाइयों के घर को छोड़कर कहीं दीया न जला। लक्ष्मी समय पर आईं। सारे गांव में घूमीं पर कहीं रोशनी का नाम था। जहां देखो, अंधेरा-ही-अंधेरा, विवश होकर वह उस गरीब ब्राह्मण के घर पहुंचीं। परन्तु बहू ने तो पहले ही से किवाड़ बन्द कर रक्खे थे। लक्ष्मी अंदर घुसने के लिए व्याकुल हो उठीं। उन्होंने किवाड़ खटखटाये। बहू ने पूछा, "कौन है ?" लक्ष्मी ने अपना नाम-ठिकाना बतला दिया।

बहू ने कहा, "दूसरा घर देखिये। मुझ गरीव के यहां आपका क्या सत्कार हो सकेगा !"

लक्ष्मी वहां से चल दीं। परन्तु जायं कहां ? हर घर में अंधेरा छाया था। हारकर फिर उसी दरवाजे पर आईं, वोलीं, "हे कुलदेवी, तुम जो कहोगी, सव पूरा करूंगी। मुझे भीतर आ जाने दो।"

बहू ने कहा, "तुम शौक से आ सकती हो, लेकिन पहले वचन दो कि आगे कभी इस घर में तंगी नहीं रहेगी और सव लोग हमेशा सुखी रहेंगे।"

लक्ष्मी ने वचन दे दिया और उस दिन से उस घर का भाग्य पलट गया और सव आनंद से रहने लगे। □
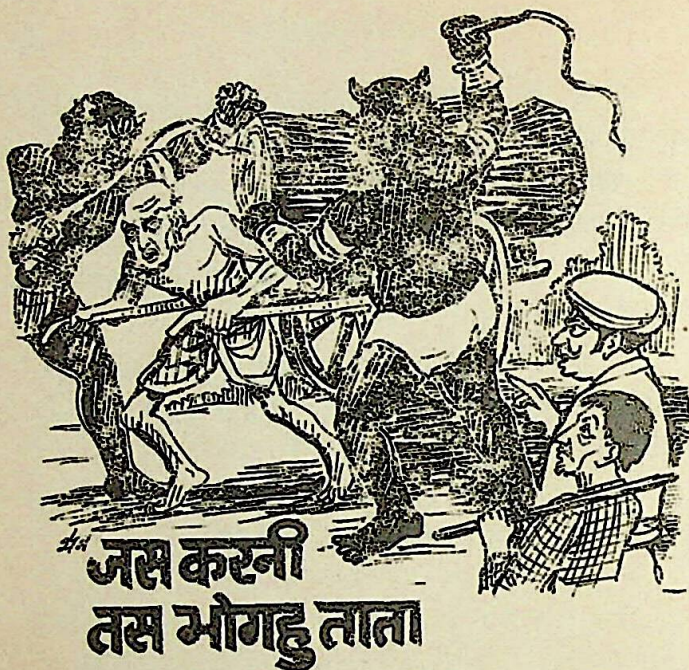
जस करनी तस भोगहु ताता

किसी गांव में एक जुलाहा रहता था। वह वहुत ही गरीब था। किसी दिन एक वार, तो किसी दिन आधा पेट खाकर अपना काम चलाता और किसी दिन वेचारे को वह भी नसीव न होता।

उसके एक लड़की पैदा हुई। वह दूज के चांद की तरह दिन-व-दिन बढ़ने लगी। देखने में वह परी-जैसी सुन्दर लगती थी। जव वह सयानी हुई तो उसके पिता ने एक गरीब जुलाहे से उसकी शादी कर दी। पति के घर की भी पिता जैसी ही हालत थी। वहां भी उसे भर-पेट भोजन नहीं मिलता था।

एक दिन वह अपने पति से वोली, "हम सव इतनी गरीवी

में दिन बिता रहे हैं। कबतक ऐसे चलता रहेगा ?"

जुलाहा बोला, "पर दूसरा चारा क्या है ?"

"अगर तुम मुझे एक चरखा और कुछ रुई ला दो तो मैं कोई ऐसी जुगत निकालूंगी, जिससे हमारे दिन फिर जायं।"

जुलाहे ने दूसरे ही दिन पैसा उधार लेकर चरखा और रुई लाकर दे दिये।

जुलाहे की स्त्री जितनी रूपवती थी, उतनी ही गुणवती भी थी। वह सूत कातकर करघे पर बढ़िया चीजें बुनती। सुन्दर-सुन्दर धोतियां और रंग-बिरंगे कपड़े तैयार करती। धोतियों पर बढ़िया किनारा लगाती और कपड़ों पर भांति-भांति के फूल बनाती। उसकी कारीगरी को देखकर लोग चकित रह जाते। कुछ ही दिनों में घर की गरीबी दूर हो गई।

जुलाहे की स्त्री की कारीगरी की बात सारे देश में फैल गई। बड़े-बड़े राजा-रजवाड़ों से कपड़े की मांग आने लगी। रईस लोग उसके बनाये कपड़ों को मुंह-मांगे दाम में खरीदने लगे।

जुलाहे की स्त्री ने एक बार बड़ी सुन्दर दरी तैयार की। वह दरी ऐसी थी कि वैसी दुनिया में कभी न बनी थी। उस दरी पर सारे राज्य का नक्शा बनाया गया था। उसमें नगर और गांव, जंगल और खेत, पहाड़ और झरने, आसमान में उड़ते पंछी, जंगली बाघ-सिंह आदि नाना प्रकार की चीजें दिखाई गई थीं।

तैयार होने पर उसने वह दरी अपने पति को दी और बोली, "इसे ले जाकर राजा के यहां बेच आओ। राजा दाम

पूछें तो तुम अपनी ओर से मत वताना। कहना कि दरी का दाम दरी ही बतावेगी। या जो राजा दे सो ले लेना।"

जुलाहे ने दरी कंधे पर रक्खी और राज-दरबार की ओर चल दिया।

रास्ते में एक धनी सौदागर ने उसे रोककर पूछा, "कहो भाई, इस दरी का क्या लोगे ?"

"दरी का मोल यह दरी ही बतावेगी। मैं कुछ नहीं जानता।" जुलाहे ने कहा।

सौदागर सोचता रहा, सोचता रहा, किन्तु वह उसका दाम तय नहीं कर पाया। इतने में एक दूसरा सौदागर आया। फिर तीसरा। फिर चौथा। बाद में पांचवां और छठा। इस तरह देखते-देखते वहां सौदागरों का जमघट हो गया। सब-के-सब दरी को देखकर चकित थे, किन्तु दरी के दाम का कोई फैसला नहीं कर पाता था।

उसी समय राजा का दीवान 'खड़खड़िया' पर सवार होकर उधर से गुजरा। भीड़ देखकर वह 'खड़खड़िया' से उतर पड़ा और वहां आया। उसे देखते ही भीड़ ने उसे रास्ता दे दिया। दीवान ने दरी देखी। देखकर बहुत खुश हुआ। उसने सोचा, यह दरी तो राज-दरबार के योग्य है।

दीवान ने जुलाहे से पूछा, "यह दरी तुम कहां से लाये हो ?"

जुलाहा बोला, "मेरी स्त्री ने बुनकर तैयार की है।"

दीवान ने कहा, "तो, इसकी क्या कीमत है ?"

जुलाहा बोला, "मैं नहीं जानता। मेरी स्त्री ने बताया कि इसे तुम राज-दरबार में ले जाओ। दरी का दाम दरी आप

बोलेगी। या राजा जो दाम लगायें, सो ले लेना।"

दीवान ने कहा, "ठीक कहते हो। राज-दरबार के अलावा इस दरी का दाम कौन लगा सकता है। अच्छा, तो लो ये दो लाख अशर्फियां।"

जुलाहे ने अशर्फियां ले लीं और दरी देकर अपने घर चला गया।

दीवान दरी लेकर फौरन राजा के पास पहुंचा और उसे राजा को दिखाया।

राजा अपनी आंखों के सामने अपने सारे राज्य का चित्र देखकर दंग रह गया।

जब रात को वह अपने पलंग पर लेटा तो उसे नींद नहीं आई। बार-बार उस दरी को बुननेवाली स्त्री के बारे में उसके मन में विचार उठते। सोचता—वह कितनी सुन्दरी होगी, जिसने इतनी अच्छी दरी तैयार की है! उसे देखना चाहिए और उससे शादी करनी चाहिए।

सारी रात पलकों पर बीती। सवेरा हुआ। राजा ने मामूली आदमी के कपड़े पहने और उसी गांव को चल पड़ा, जहां जुलाहे का घर था। खोजते-खोजते वह उसके घर पर पहुंच गया। दरवाजा खटखटाया। जुलाहे की स्त्री ने दरवाजा खोला। राजा ने जैसे ही उसे देखा कि खड़ा-का-खड़ा रह गया। वह कुछ कह न सका। उसके सामने मानो परी खड़ी थी।

जुलाहे की स्त्री ने यह देखा तो बड़ी हैरान हुई। कुछ देर तक उसने राह देखी कि वह कुछ कहे, पर जब वह चुप ही रहा तो उसने उसका कंधा पकड़कर उसे घुमा दिया और दरवाजा बन्द करके भीतर चली गई।

राजा को इससे बड़ी चोट लगी। वह सोचने लगा, "मैं यहां अकेला क्यों आया ? फौज को साथ लाता तो अभी इसे अपनी रानी बनाकर ले जाता। ऐसी सुन्दर स्त्री एक जुलाहे के घर में रहे, यह ठीक नहीं है।"

राजा महल में लौट आया। अब उसके मन में पाप जोर करने लगा—चाहे जैसे भी हो, जुलाहे की स्त्री को छीन लेना चाहिए।

इसके बाद राजा ने अपने दीवान को बुलाया और बोला, "मैं जुलाहे की स्त्री से शादी करना चाहता हूं। अगर तुम मेरी मदद करोगे तो मैं तुम्हें इनाम में आधा राज्य दे दूंगा। अगर स्त्री न मिली तो तुम्हें भाड़ में झूकवा दूंगा।"

दीवान यह सुनकर बहुत परेशान हुआ। वह क्या करे ? कई दिन निकल गये। वह रात-दिन इसी सोच में डूबा रहता था कि आखिर क्या हो। बहुत सोचा, लेकिन कोई उपाय नहीं सूझ पड़ा। वह उदास रहने लगा। सवेरे-शाम गंगा-स्नान करने का उसका नियम था। वह गंगा-किनारे जाता था और स्नान करके वहीं पूजा किया करता था। अब बेचारे का वह नियम छूट गया। जब उसे नियम की याद आती, वह गंगा-किनारे चला जाता, स्नान करता और चुपचाप वहां बैठा रहता।

एक गड़रिया वहां भेड़ चराया करता था। वह हमेशा दीवान को बड़े तड़के स्नान-पूजन करते देखा करता था। परन्तु कई दिन से उसने देखा कि वह कभी दिन चढ़े आता है तो कभी दोपहर को और उसके चेहरे पर परेशानी छाई रहती है। उसने एक दिन मौका देखकर दीवान से पूछा, "दीवानजी, आजकल आप इतने उदास क्यों रहते हैं ? बड़े सवेरे आप सब दिन यहां

आ जाया करते थे, पर कुछ दिनों से इस नियम में ढिलाई पड़ गई है। क्या बात है ?"

दीवान ने कहा, "अरे भाई, क्या बताऊं ! बताने में फायदा भी क्या ? तुम क्या कर सकोगे ? राजा ने मेरे सामने एक ऐसी मुसीबत खड़ी कर दी है कि कुछ न पूछो।"

गड़रिया बोला, "मुझे बताइये तो सही। मैं आपकी मदद करने की पूरी कोशिश करूंगा। देखिये, अकल ऐसी चीज है कि वह किसी एक के ही हिस्से में नहीं आती। जुगत बैठ जाने पर छोटा आदमी भी बड़ा काम कर डालता है। फिर मैं आपके काम नहीं भी आ सका, तो भी मैं आपका कुछ बिगाड़ूंगा तो नहीं। आप बेफिकर होकर बताइये।"

दीवान ने सोचा, गड़रिया ठीक कह रहा है। बात बता देने में कोई हर्ज नहीं है। भगवान की लीला को कौन जानता है !

यह सोच दीवान ने उसे सब हाल बता दिया।

गड़रिया बोला, "दीवानजी, एक उपाय कीजिये। हो सकता है, काम बन जाय। जुलाहा-जाति का आदमी बहुत सीधा होता है। अगर उसकी स्त्री भी भोली-भाली हुई तो उससे बहुत आसानी से निबटा जा सकता है। कुछ ऐसी तरकीब लगाइये कि उसकी समझ पर ताला पड़ जाय। आप राजा से कहिये कि वह जुलाहे को स्वर्ग में यह पता लगाने के लिए भेजें कि वहां उसके पिता का क्या हाल-चाल है। अगर वह वहां जाने को राजी हुआ तो पहले तो उसे स्वर्ग का ठिकाना मिलना ही मुश्किल होगा और अगर कहीं वह वहां पहुंच ही गया तो वहीं का हो जायगा।"

दीवान को यह सलाह ठीक लगी।

दूसरे दिन वह राजा के दरबार में हाजिर हुआ और राजा से बोला, "महाराज, मैंने जुलाहे से उसकी स्त्री को अलग करने का रास्ता खोज लिया है।"

राजा बहुत खुश हुआ। दीवान ने राजा को तरकीब बताई। राजा ने तुरंत जुलाहे को पकड़कर लाने का हुक्म दिया।

जुलाहे के आने पर राजा ने कहा, "तुमने बड़ी ईमानदारी से आजतक हमारी सेवा की है। तुम्हारी कोई शिकायत सुनने को नहीं मिली है। तुम्हारे जैसे नेक और सच्चे आदमी की मुझे आज जरूरत पड़ गई है। आज मैं तुम्हें एक जरूरी काम सौंपता हूं। तुम स्वर्ग में जाकर यह मालूम करो कि मेरे पिताजी का वहां क्या हाल है। पता लगाकर आओगे तब मैं तुम्हें बहुत-सा धन इनाम में दूंगा। अगर तुम नहीं जाओगे, तो तुम्हें सूली पर चढ़वा दूंगा।"

यह सुनकर जुलाहे के प्राण सूख गये। उसने कहा, "मैं सोचकर जवाब दूंगा।"

वह घर आया तो मारे चिन्ता के पीला पड़ रहा था। उसकी स्त्री ने पूछा, "क्यों, तुम इतने उदास क्यों हो? ऐसी क्या मुसीबत आ पड़ी है! मैं उसका उपाय सोचूंगी।"

जुलाहे ने राजा का हुक्म उसे सुना दिया।

"यह भी कोई काम है!" उसकी स्त्री ने कहा, "यह तो बड़ी मामूली चीज है। खाना खाकर आराम से सोओ। रात का सोचा कभी सच नहीं होता। सुबह मैं इसका उपाय बताऊंगी।"

दूसरे दिन बड़े सबेरे जुलाहा उठा। उसकी स्त्री ने कुछ पकवान बनाकर रास्ते के लिए दिये। साथ ही सोने की एक अंगूठी दी। बोली, "राजा के पास जाओ और कहना कि मेरे साथ अपने दीवान को भी भेज दीजिये, जिससे वह इस बात की गवाही दे सके कि मैं सचमुच स्वर्ग में हो आया हूं। अगर वह तैयार हो जाय तो दीवान को साथ लेकर रास्ते में इस अंगूठी को डाल देना। आगे-आगे यह अंगूठी लुढ़कती जायगी और पीछे-पीछे चलते जाना। जब अंगूठी रुक जाय तो समझ लेना कि स्वर्ग आ गया।"

जुलाहे ने पकवान की पोटली और अंगूठी ली और सीधा राजा के यहां पहुंचा और दीवान को साथ भेजने को कहा। राजा इन्कार न कर सका। दीवान और वह दोनों स्वर्ग के लिए रवाना हुए।

जुलाहे ने अंगूठी नीचे डाल दी और वह लुढ़क-लुढ़कर आगे बढ़ने लगी। उसके पीछे-पीछे चलते-चलते उन्होंने खुले मैदान, जंगल, पहाड़, झरने, नदी-नाले, जाने क्या-क्या पार किये।

जब दोनों चलते-चलते थक जाते तो पोटली से निकालकर कुछ खा-पी लेते और फिर आगे का रास्ता नापते।

चलते-चलते वे बहुत दूर निकल गये। दीवान थककर चूर हो गया। तभी एक बियावान जंगल आया, जहां एकदम सुन-सान था। कोई आवाज तक सुनाई नहीं देती थी। वहां पहुंचकर अंगूठी रुक गयी।

जुलाहे और दीवान ने वहां ठहरकर कुछ खाया-पीया। उसी समय उन दोनों ने क्या देखा कि एक बूढ़ा आदमी लकड़ी

से भरी एक बहुत बड़ी गाड़ी खींचे ला रहा है। बोझ के मारे उसकी कमर दोहरी हो रही थी और जीभ निकालकर वह बुरी तरह हांफ रहा था। दो जल्लाद जैसे आदमी एक दाईं ओर से और दूसरा बाईं ओर से उसपर कोड़े बरसा रहे थे।

जुलाहे ने दीवान से कहा, "वह बूढ़ा आदमी कौन है? पहचानो। मैं तो उसे जानता नहीं।"

दीवान अचरज से बोला, "अरे, यही तो हैं राजा के पिता। हाय राम, कैसा हाल हो रहा है इनका!"

"ओ धर्मराज के दूत," जुलाहे ने चिल्लाकर कहा, "उस बूढ़े आदमी को जरा सांस तो ले लेने दो। मैं उससे बात करना चाहता हूं।"

यमदूतों ने लाल-लाल आंखों से उसकी ओर देखा। बोले, "हमारे पास रुकने का समय नहीं है। इन लकड़ियों को कौन ढोयेगा?"

जुलाहे ने कहा, "इसकी क्या चिन्ता है। यह देखो, मेरे साथ एक आदमी है। यह उसकी जगह ले लेगा।"

इस पर यमदूत राजी हो गये। उन्होंने बूढ़े आदमी को अलग कर दिया और उसकी जगह दीवान को गाड़ी में जोत दिया। दीवान ठिठका तो उन्होंने कसकर कोड़े लगाने शुरू कर दिये। बेचारा दीवान उस बूढ़े की तरह दोहरा होकर गाड़ी खींचने लगा।

जुलाहे ने राजा के बूढ़े पिता से पूछा, "महाराज, आपके क्या हाल-चाल हैं?"

"आह, मेरे नेक भाई," राजा के पिता ने कहा, "यहां मेरा बहुत बुरा हाल है। जैसा बोया था, वैसा काट रहा हूं। रामा-

यण में ठीक ही कहा है—"जस करनी तस भोगहु ताता, नरक जात काहे पछताता।" सो भैया, तुम जब लौटकर नगर में जाओ तो मेरे बेटे को मेरी याद दिलाना और कहना कि वह प्रजा के साथ किसी तरह का बुरा बर्ताव न करे, नहीं तो मेरी तरह ही उसे भी नरक की मुसीबतें भुगतनी पड़ेंगी। करनी देखी जाती है, मरनी के समय।"

उन दोनों की बातचीत देर तक चलती रही। यमदूत गाड़ी लेकर गये और उसे खाली करके वापस लौट आये। जुलाहे ने राजा के बूढ़े पिता से विदा ली। दीवान भी उसके साथ हो लिया। दोनों अपने नगर को रवाना हुए।

कुछ दिन के बाद वे अपने नगर में पहुंच गये। सीधे राजा के महल में गये। राजा की निगाह जब जुलाहे पर पड़ी तो वह गुस्से में भरकर बोला, "इतनी जल्दी वापस कैसे लौट आये?"

जुलाहा बोला, "महाराज, मैं स्वर्ग में आपके पिता से मिलकर आया हूं। उन्होंने कहलवाया है कि उनकी बड़ी दुर्गति हो रही है। अगर आप उनकी तरह अपनी दुर्गति नहीं करवाना चाहते तो अपनी प्रजा के साथ बुरा बर्ताव न करें।"

यह सुनकर राजा और अधिक लाल-पीला हो गया। बोला, "तुम यह कैसे साबित कर सकते हो कि सचमुच स्वर्ग गये और मेरे बूढ़े पिता से मिलकर आये हो?"

जुलाहा बोला, "महाराज, दीवानजी मेरे साथ थे। जरा इनकी पीठ देख लीजिये। यमदूतों के कोड़ों ने इनका क्या हाल कर दिया है!"

राजा ने दीवान के कपड़े उतरवाकर पीठ देखी तो उसकी

आंखें खुल गईं। वह अपने किये पर पछताने लगा। उसने जुलाहे से माफी मांगी और वादा किया कि आगे वह ऐसी गलती कभी नहीं करेगा।

राजा ने उसकी स्त्री को छोड़ दिया। जुलाहा अपनी सती स्त्री के साथ घर आया और आनन्द से दिन बिताने लगा। □

किसी नगर में एक राजा राज करता था। वह बहुत ही न्याय-प्रिय और प्रजा का भला करनेवाला था। उसके राज्य में प्रजा सुखी थी। चोर, डाकू और बुरे लोग उसके राज्य में नहीं टिक पाते थे। साधु-संतों का सत्कार होता था।

राजा बराबर अच्छी-से-अच्छी बातें सोचता रहता था। जो भी साधु-महात्मा उसके यहां आता, उसकी पूजा होती और बहुत ही भावना से राजा पूछता, "महाराज, यह बताइये कि एक आदमी घर-द्वार, राज-पाट, माता-बहन, स्त्री-पुत्र को छोड़-कर संन्यासी बन जाता है और दूसरा दुनिया की माया में लिपट-कर गृहस्थ-धर्म का पालन करता है। इन दोनों में श्रेष्ठ कौन है? जो श्रेष्ठ होगा उसी धर्म का पालन करने की मैं कोशिश करूंगा। मेरे विचार से तो संन्यास सबसे महान और कठिन

धर्म है। जो इस धर्म का पालन करता है, उसे मुक्ति मिलती होगी।"

राजा के दरबार में अनेक प्रकार के विद्वान और साधु-संन्यासी आते थे। वे अपने-अपने ढंग से अपना विचार प्रकट करके चले जाते थे, किन्तु राजा को किसी से संतोष न होता था।

एक बार की बात है। एक साधु राजा के यहां आया। राजा ने उससे भी वही सवाल किया। सच बात यह है कि राजा का मन राज-काज में नहीं लगता था। वैराग्य उसके सिर पर सवार रहता था।

साधु बहुत ही विद्वान था। उसने राजा को समझाते हुए कहा, "राजन्, अपने-अपने स्थान पर दोनों बड़े हैं। किसी को छोटा नहीं कहा जा सकता।"

"सो कैसे?" राजा ने पूछा।

"इसका जवाब मैं जरा देर से दूंगा, राजन्।" साधु ने कहा, "आपको थोड़ा धीरज रखना होगा और कष्ट भी सहन करना पड़ेगा। कुछ दिनों तक आपको मेरे साथ रहना पड़ेगा।"

राजा राजी हो गया। राजपाट युवराज को सौंपकर फकीरी बाना धारण किया और साधु के साथ चल पड़ा। नाना देश, जंगल, पहाड़, झरने और बड़े-बड़े मैदानों को पार करते हुए दोनों जने एक बहुत बड़े रजवाड़े में पहुंचे।

उस राजा के राज्य में कोई उत्सव हो रहा था। साधु और राजा ने देखा कि सब लोग सुन्दर पोशाकों और आभूषणों से सजकर सभा में विराजमान हैं। वहां कोई घोषणा की जा रही थी। कौतूहलवश दोनों वहीं ठहर गये। घोषणा यह थी, "राजकुमारी अपना वर स्वयं चुनेगी।"

राजकुमारी बड़ी सुन्दर थी। वह दुनिया के सबसे सुन्दर युवक से, जो विद्या-वुद्धि में भी बढ़-चढ़कर हो, विवाह करना चाहती थी। परन्तु अबतक राजकुमारी को किसी का रूप अच्छा नहीं लगा तो किसी की विद्या-वुद्धि से संतोष नहीं हुआ। ऐसे अवसर कई वार आ चुके थे और भिन्न-भिन्न देशों के राजकुमार आ-आकर लौट गये थे।

राजकुमारी हाथ में वरमाला लिये खुली पालकी पर वर-वरण करने निकली। वह चारों ओर घूम आई, परन्तु उसे एक भी योग्य वर नहीं दिखाई दिया। लोग निराश हो चले। सब किया-कराया यों ही गया। ठीक उसी समय एक बहुत ही सुन्दर युवक संन्यासी, जिसका मुख-मंडल सवेरे के सूरज की तरह दमक रहा था, आकर एक स्थान पर चुपचाप तमाशा देखने के लिए खड़ा हो गया।

कहार पालकी लेकर घूमता-घामता वहीं आया। राजकुमारी ने संन्यासी का चेहरा ऊपर से नीचे तक देखा। देखकर उसपर मुग्ध हो गई। उसकी आंखें बंद हो गईं। उसने सिर झुकाकर वरमाला उसी के गले में डाल दी और उसके पैरों पर गिर पड़ी।

युयक संन्यासी ने तुरंत वरमाला तोड़कर फेंक दी और बोला, "यह क्या तमाशा है ! मैं संन्यासी हूं। यह वन्धन मेरे लिए नहीं है।"

राजकुमारी के पिता ने जब यह दृश्य देखा तो उन्हें लगा कि संन्यासी शायद निर्धन है, इसलिए मेरी बेटी से ब्याह करने में झिझक रहा है। सो उन्होंने घोषणा की कि राजकुमारी ने जिसे वरमाला पहनाई है, उसे मैं दहेज में आधा राज्य दे दूंगा

और मेरे मरने पर वही सारे राज्य का अधिकारी होगा।

संन्यासी बोला, "मैं मोह-माया के झंझट से कबका नाता तोड़ चुका हूं। मुझे यह सब नहीं चाहिए।" इतना कहकर वह वहां से चलता बना।

लेकिन राजकुमारी उस संन्यासी पर इतनी मोहित हो चुकी थी कि वह किसी भी हालत में अपना निश्चय बदलने को तैयार नहीं थी। वह उसका पीछा यह कहकर करने लगी कि अगर वह मुझे नहीं अपनायेंगे तो मैं अपने प्राण त्याग दूंगी।

यह सब हाल देखकर साधु ने राजा से कहा, "राजन्, चलिये हम लोग इस जोड़ी का नाटक देखें। हां, इस तरह चलिये कि इस जोड़ी को हमारा पता न चले।"

संन्यासी वरमाला को तोड़कर और राज्य के लालच को ठुकराकर राजा की नगरी से बाहर हो गया और बहुत दूर निकल गया। जाते-जाते उसने एक पहाड़ और जंगल में प्रवेश किया और एक घाटी में जाकर अदृश्य हो गया।

राजकुमारी ने उसे बहुत खोजा, किन्तु पता नहीं पा सकी। जब संन्यासी के मिलने की उसे कोई आशा न रही तो वह उसी जंगल में एक पेड़ की छाया में चूर होकर गिर गई और रोने लगी।

कुछ देर के बाद राजा और साधु राजकुमारी के पास पहुंच गये। साधु ने उसे ढांढ़स बंधाते हुए कहा, "बेटी, रोओ मत, हम तुम्हारी हर तरह से मदद करेंगे, लेकिन अब तो अंधेरा हो चला है। हम यहीं रात गुजारें। सबेरा होने पर हम तुम्हारी खोज में योग देंगे।"

तीनों रातभर के लिए उसी पेड़ के नीचे टिक गये।

उस पेड़ पर एक घोंसला था, जिसमें एक चिड़ा, एक चिड़िया और उनके तीन बच्चे रहते थे।

चिड़ा ने देखा कि तीन मेहमान उसके घर में आकर टिक गये हैं। ठंड का समय है। ईंधन है नहीं, जो उनके सामने जला दे। यह बात उसने चिड़िया से कही।

चिड़िया बोली, "ठहरो, मैं कुछ उपाय करती हूं।"

चिड़िया फुर्र से उड़ी और कहीं से खोजकर एक जलती हुई लकड़ी अपनी चोंच में उठाकर ले आई और मेहमानों के सामने गिरा दी। मेहमानों ने सूखे पत्ते और सूखी टहनियां चुनकर आग जला ली।

लेकिन चिड़ा को इतने से ही संतोष नहीं हुआ। उसने चिड़िया से कहा, "सुनती हो! आग तो जल गई। लेकिन मेहमानों को खिलाओगी क्या? वे रात-भर भूखे रहे तो बड़ा पाप लगेगा। घरआए मेहमान को भोजन कराना गृहस्थ का सबसे बड़ा धर्म है। घर में कुछ है नहीं। लेकिन देखो जी, कुछ-न-कुछ तो करना ही पड़ेगा। तुम बाल-बच्चों की देख-रेख करना, मैं अपने को अतिथि भगवान के अर्पण किये देता हूं। देह धरे का दण्ड चुक जायगा।"

चिड़िया कुछ कहे कि उससे पहले ही चिड़ा धधकती आग में गिर पड़ा और ज़रा-सी देर में भुनकर खाने योग्य बन गया।

मेहमानों ने उसके गिरते ही बचाने की कोशिश की, पर बचा नहीं पाये।

पति का त्याग देखकर चिड़िया ने सोचा कि मेहमान तीन हैं और सब-के-सब भूखे हैं। एक चिड़ा के मांस से उनका पेट कैसे भरेगा? पत्नी के नाते उसका परम धर्म हो जाता है कि वह

भी अपने पति के काम में योग दे, जिससे वह सफल हो।

यह सोच वह भी तीर की तरह आग में गिर गई।

अब रहे तीन नन्हे-नन्हे बच्चे। उन तीनों ने देखा कि मां और बाप का मांस मिलाकर भी महमानों का पेट नहीं भरेगा। उन तीनों ने आपस में विचार किया कि माता-पिता के अधूरे काम को पूरा करना सन्तान का धर्म है। सो वे भी उसमें मदद करें।

यह सोचकर वे तीनों भी आग में कूद पड़े।

पक्षियों की यह अद्‌भुत लीला देखकर तीनों महमान चकित रह गये। मांस किसी से नहीं खाया गया।

उस दृश्य को देखकर राजकुमारी को बड़ी दया आई। उसने साधु से विनती की, "बाबा, आप अपने योग-बल से इन पक्षियों को जिला दीजिये।"

साधु ने भगवान का नाम लेकर अपने बाएं हाथ की छोटी अंगुली काटी और खून की बूंदें जैसे ही उन पक्षियों पर पड़ीं कि वे सब जीवित हो उठे।

तीनों महमानों को बड़ी खुशी हुई।

साधु ने राजा से कहा, "राजन्, तुमने देख लिया, हर आदमी अपनी-अपनी जगह पर बड़ा है। हरेक धर्म की अपनी महत्ता है। अगर तुम्हें गृहस्थ बनकर रहना है तो इन चिड़ियों की तरह जीवन को परोपकार का साधन और यज्ञ समझो। यदि तुम संसार से विरक्त होकर संन्यास में विश्वास रखते हो तो इस संन्यासी की तरह रूप, धन-संपदा और राजपाट की ओर आंख उठाकर भी मत देखो। गृहस्थ और संन्यासी दोनों अपनी-अपनी जगह पर बड़े हैं। दोनों का काम अलग-अलग है।

न कोई छोटा है, न कोई वड़ा ।"

राजकुमारी गृहस्थ बनकर राजसुख भोगने की इच्छा रखती थी। साधु की बातें सुनकर उसकी आंखें खुल गईं।

इसके वाद साधु ने राजकुमारी का ब्याह राजा से कर दिया और वे दोनों खुशी-खुशी अपने नगर में लौटकर आनंद से रहने लगे। □

रानी जीती राजा हारा

किसी नगर में एक ब्राह्मण रहता था। वह बड़ा विद्वान और सदाचारी था। उसकी पत्नी भी बहुत ही सुशील और घर के काम-काज में बडी चतुर थी। उनके एक लड़की पैदा हुई। माता-पिता दोनों उसे बहुत प्यार करते थे। लड़की दिनों-दिन बढ़ने लगी। देखते-देखते वह सयानी हो गई। एक दिन ब्राह्मणी ने ब्राह्मण से कहा, "बेटी के लिए अब वर ढूंढ़ो। उसका ब्याह कर देना चाहिए।"

पिता ने कभी सोचा ही न था कि उन्हें इतनी जल्दी लड़की के लिए वर ढूंढ़ना पड़ेगा। वह चिंता में डूब गया। उसने पंत्रा उठाया। पत्रा देखने पर मालूम हुआ कि शुभ लगन उसी मास में है। फिर आगे तीन साल तक नहीं पड़ती थी। यह देखकर उसको बड़ी घबराहट हुई। ब्राह्मणी को यह पता चला तो उसे भी बड़ी बेचैनी हुई। परन्तु कुछ देर के बाद सोच-समझकर बोली, "अभी बीस दिन बाकी हैं। ठीक से वर खोजोगे तो इतने दिनों में जरूर मिल जाना चाहिए। लड़की का भाग्य होगा तो तीन दिन में मिल जायगा।"

ब्राह्मण बोला, "तुम ठीक कहती हो, लेकिन हमारे पास पैसा तो है नहीं। ब्याह कैसे करेंगे?"

पति और पत्नी दोनों देर तक विचार करते रहे।

उसी नगर में एक राजा रहता था। उसने एक ऐसा महल बनवाया था, जिसमें ठंड के मारे दो-चार घंटे रहना भी मुश्किल था। गर्मी में भी कोई नहीं रह सकता था। राजा ने ढोल पिटवाया कि जो आदमी रात-भर उस घर में रह जायगा उसे बहुत-सा इनाम दिया जायगा। इनाम के लोभ में पड़कर बहुत से लोगों ने अपने प्राण गंवा दिये। जो भी उस मकान में शाम को घुसता, सबेरे मुर्दा बनकर निकलता। ब्राह्मण को महल की बात याद हो आई।

उसने ब्राह्मणी से कहा, "मैं राजा के उस ठंडे महल में भगवान का नाम लेकर रात-भर रहूंगा और बहुत-सा इनाम लेकर अपनी लाड़ली बेटी का ब्याह करूंगा।"

ब्राह्मणी बहुत घब्राई, बोली,,, उसमें बहुत से लोग अपनी जान गंवा चुके हैं। अगर तुम्हें कुछ हो गया तो हम दोनों

की क्या गति होगी ?"

पर ब्राह्मण नहीं माना। बोला, "आगे की चिन्ता भगवान पर छोड़ दो। आज जो समस्या है, उसे सुलझाने का और कोई रास्ता नहीं है। सो मुझे जाने दो। भगवान की कृपा हुई तो जैसे कुम्हार के आवा में से बिल्ली के बच्चे जिन्दा निकल आये थे, उसी तरह मैं भी इस ठंडे महल से सही-सलामत निकल आऊंगा।"

इसके बाद ब्राह्मण राजा के दरबार में गया और बोला, "महाराज, आज की रात मैं आपके ठंडे महल में बिताऊंगा।"

राजा ने उस बूढ़े ब्राह्मण को समझाते हुए कहा, "ब्राह्मण देवता, आप रात-भर तो क्या, घंटे-दो-घंटे भी जीवित नहीं रह सकेंगे।"

लेकिन जब ब्राह्मण न माना तो लाचार होकर राजा ने शाम को उसे उस ठंडे महल में बन्द करवा दिया।

ब्राह्मण ने रात होने पर राज-महल के सामने की एक खिड़की खोल दी, जिससे राज-महल के ऊपर जलनेवाली बत्ती दिखाई दे सके। ब्राह्मण रात-भर एकटक उसीकी ओर देखता रहा।

सबेरा हुआ। पहरेदारों ने ताला खोला तो देखते क्या हैं कि ब्राह्मण जीवित है। पहरेदार उसे राज-दरबार में ले गये। ब्राह्मण को जीवित देखकर राजा दंग रह गया। उसने पूछा, "महाराज, यह बताइये कि आपने उस ठंडे महल में रात कैसे गुजारी ?"

ब्राह्मण ने कहा, "राजन्, आपके राज-महल पर जो बत्ती जल रही थी, उसीकी ओर मैं एकटक देखता रहा। रात कट गई।"

राजा ने गर्दन हिलाते हुए कहा, "महाराज, इसीसे तो आप बच गये, नहीं तो अबतक जितने भी उस महल में गये, कोई जिन्दा नहीं लौट सका। और आप साठ बरस के बूढ़े ब्राह्मण जैसे-के-तैसे लौट आये ! आपकी देह जरूर ही बत्ती की गरमी पाती रही होगी। इसलिए आप इनाम पाने के अधिकारी नहीं हैं।"

ब्राह्मण निराश होकर घर चला आया ।

राजा के इस अन्याय की चर्चा सारे नगर में फैल गई। उसी नगर में एक छोटा राजा रहता था। वह बड़े राजा से डरता रहता था। उस छोटे राजा ने सोचा, जब ब्राह्मण पर ऐसा जुल्म हुआ है, तो मेरे ऊपर भी कभी-न-कभी राजा ऐसा ही अन्याय कर बैठेगा। वह इसी सोच-विचार में उदास बैठा ही था कि उसकी बेटी वहां आ पहुंची। पिता को उदास देखकर उसने उदासी का कारण पूछा। पहले तो राजा ने टालमटोल की, पर लड़की न मानी तो उसने अपना सारा हाल कह सुनाया। बोला, "लगता है, मुझे यह राज छोड़कर कहीं जाना पड़ेगा। राजा बड़ा अन्यायी हो गया है। इसीलिए उदास रहता हूं, बेटी।"

बेटी ने कहा, "आप इस बात की चिन्ता न करें। मैं ब्राह्मण को राजा से इनाम दिला दूंगी। आप कल के लिए राजा, राज्य के कर्मचारी और सारी फौज को भोजन के लिए न्यौता दे आइये। कर्मचारियों और सैनिकों को आप भोजन करायें, बड़े राजा को मैं अपने हाथ से भोजन बनाकर खिलाऊंगी।"

बेटी बड़ी चतुर थी। उसके कहने के अनुसार छोटे राजा ने बड़े राजा को निमंत्रण भिजवा दिया। राजा ने मंजूर कर

लिया। अगले दिन समय पर बड़े राजा अपने सभी कर्मचारियों और फौज के साथ छोटे राजा के यहां भोजन करने आया।

छोटे राजा ने सबको भोजन कराकर पान-सुपारी खिलाकर मान-सहित विदा किया। बड़े राजा से कहा, "आपका भोजन मेरी कन्या अपने हाथ से तैयार कर रही है। आप वहां जाकर भोजन कर लीजिये।"

बड़ा राजा अपने अंग-रक्षकों के साथ कन्या के महल में आया और भोजन के सम्बन्ध में पूछताछ की। राजकुमारी ने बड़े आवभगत से बड़े राजा को बैठाया और बोली, "महाराज, कुछ देर नहीं है। सब चीजें तैयार हैं। बस खीर बनने को रही है।"

इतना कहते हुए उसने उंगली के इशारे से बताया कि वह देखिये, खीर आग पर चढ़ा रक्खी है।

राजा ने देखा कि ऊपर एक छींके पर पीतल की पतीली टंगी हुई है और उसके नीचे आठ-नौ हाथ पर आग जल रही है। राजा ने राजकुमारी से कहा, "राजकुमारी, इस हालत में तो खीर कभी नहीं पक सकेगी। इतनी ऊंचाई पर आग की गर्मी पतीली तक कैसे पहुंच सकती है?"

राजकुमारी ने मुस्कराकर कहा, "महाराज, जब ठंडे महल में वन्द ब्राह्मण को आपके राजमहल की बत्ती से गर्मी पहुंच सकती है तो आठ-नौ हाथ ऊपर खीर क्यों नहीं पक सकती?"

राजा सारी बात समझ गया, पर कुछ बोल नहीं सका। राजकुमारी से हारकर उसने ब्राह्मण को बुलाया और उसे खूब इनाम दिया।

राजा ने इनाम तो दिया, लेकिन राजकुमारी की वात उसे

चुभ गई और उसने उससे बदला लेने की ठानी। अगले दिन राजा ने छोटे राजा की पुत्री की चतुराई की दरबार में बड़ी तारीफ की और उससे विवाह करने की घोषणा की।

छोटे राजा के मन के खिलाफ होने पर भी तय की हुई तिथि को बारात चढ़ी और छोटे राजा के महल में आई।

जब भांवरें पड़ने लगीं तो बड़े राजा ने साढ़े तीन ही फेरे किये। चौथा फेरा पूरा किये बिना ही बैठ गया।

बारात विदा करवाकर राजा अपने महल में आया। रात को राजा-रानी का मिलन हुआ। रानी ने अधूरे फेरे छोड़कर उसका जो अपमान किया गया उसकी याद दिलाई तो राजा ने ब्राह्मण को उसकी इच्छा के खिलाफ जबर्दस्ती दान दिलाने की बात बताकर उससे बदला लेने के निश्चय की चर्चा की। पर बात वहीं नहीं निबटी।

अगले दिन सवेरे रनिवास से निकलते समय राजा ने रानी से तलाक की घोषणा कर दी।

अपमान से आहत होकर राजा के तलाक का उत्तर देती हुई रानी बोली, "अपने इस अपमान का बदला तुमसे ही जन्मे पुत्र से नहीं लिवाया तो मेरा नाम बदल देना। और नहीं तो तुमसे कोदों चक्की में दलवाऊंगी।"

राजा सिटपिटा गया। उस दिन से रानी अपने महल में अकेली दिन काटने लगी। अकेले रहते-रहते उसका जी ऊब गया। इसलिए मन बहलाने के लिए उसने एक तोता पाल लिया।

दिन जाते देर नहीं लगी। संयोग से ठीक नौ महीने बाद दसवें दिन रानी के एक पुत्र पैदा हुआ। बड़े राजा का नाम

जालिमसिंह था। रानी से अपने लड़के का नाम जुलुमसिंह रक्खा।

जुलुमसिंह ने जब कुछ होश संभाला तो एक दिन अपनी माता से पूछा, "मां, मेरे पिताजी कौन हैं ? कहां रहते हैं ? क्या करते हैं ?" तरह-तरह के सवालों की उसने झड़ी लगा दी।

माता ने पुत्र को ढांढस बंधाते हुए कहा, "बेटा, तुम्हारे पिता लड़ाई में मारे गये। तुम उनके योग्य पुत्र हो, तुम्हें अपने पिता के शत्रुओं से बदला लेना चाहिए। तुमपर ही मेरा पूरा भरोसा है। इस राज्य का राजा उनका सबसे बड़ा दुश्मन है। उससे बदला तभी लिया जा सकता है, जबकि उससे चक्की में कोदों दलवाया जाय।"

पुत्र ने माता की बात सुनी तो उसे बड़ा क्रोध आया। उसने कहा, "अगर मैंने इस दुष्ट राजा से चक्की में कोदों नहीं दलवाया तो मेरा नाम जुलुमसिंह नहीं।"

माता की आज्ञानुसार जुलुमसिंह ने सारे नगर में ड्यौढ़ी पिटवा दी कि राजा जालिमसिंह के नगर में जुलुमसिंह आया है। वह ठगने का काम करेगा, लेकिन ठगाई में नहीं आवेगा।

एक दिन जुलुमसिंह ने सेठ का रूप धारण किया। नगर में पहुंचकर एक तमोली की दुकान पर गया। एक सौ पान खरीदे। पैसा देते हुए कहा, "अभी ये पान अपने पास रक्खो। घर जाते समय ले लूंगा।"

वहां से चलकर वह सेठ की दूकान पर पहुंचा। एक सौ रुपयें का कपड़ा खरीदा और बोला, "सेठजी, किसी दूकानदार से सौ दिलवादूं तो ले लोगे ?"

सेठ ने कहा, "इसमें कौन-सी बात है। दिलवा दोगे तो ले

लेंगे। तुम्हारा दिल चाहे तो योंही ले जाओ। कौन बड़ी रकम है!"

जुलुमसिंह सेठ को साथ लेकर चला। बोला, "कोई बात नहीं, सेठजी। जब रुपये हैं तो फिर कर्ज सिर पर क्यों ले जाऊं?" बातें करते-करते वह तमोली की दुकान पर पहुंच गया। रौबीली आवाज में बोला, "ओ तमोली, वे सौ सेठजी को दे देना।"

तमोली बोला, "बहुत अच्छा।"

जुलुमसिंह अपने घर की ओर बढ़ा।

सेठजी तमोली की दुकान पर पान खाने लगे। चलते समय उन्होंने सौ मांगे।

तमोली ने सौ पान का बंडल आगे बढ़ा दिया।

सेठजी बोले, "मुझसे तो वह सौ रुपये के कपड़े ले गया है और तुम सौ पत्ते पान दे रहे हो। मुझे तो सौ रुपये दो।"

तमोली ने सारी बात बता दी, पर सेठ मानने को तैयार न हुआ। दोनों आपस में झगड़ने लगे।

तमोली बोला, "अरे भाई, झगड़ने से क्या फायदा? चलो राजा के यहां। वही इसका न्याय करेंगे।"

सेठ ने कहा, "चलो।"

दोनों राजा के यहां पहुंचे। राजा ने सोचा कि हो-न-हो, इस ठगी के पीछे उसी ठग का हाथ है, जिसने कल ढिंढोरा पिटवाया था। सो उसने सेठ और तमोली को अगले दिन आने के लिए कहकर विदा किया और जुलुमसिंह को पकड़नेवाले के लिए एक हजार रुपये के इनाम की घोषणा की। साथ ही सवेरे से नगर में प्रवेश करनेवालों की छानबीन के लिए पांच सिपाही

खासतौर से तैनात कर दिये ।

उधर जुलुमसिंह ने घर पहुंचकर अपनी मां को सब हाल कह सुनाया। उसकी मां ने पूरी खबर लाने के लिए तोते को भेजा। तोते ने आकर एक हजार रुपये के इनाम और पांच सिपाहियों की तैनाती की सूचना दी ।

इस बार जुलुमसिंह नाई का सामान ले नगर के लिए रवाना हुआ। जब वह नगर के द्वार पर आया तो पहरे पर खड़े सिपाहियों ने उसे रोका। वोले, "ओ हज्जाम, कहां जाता है ? पहले हमारी हजामत वना, तब आगे बढ़ना ।"

जुलुमसिंह तो यह चाहता ही था। उसने कहा, "जैसी आपकी आज्ञा। मगर यहां तो वड़ी धूप है। चलिये उस पोखर के किनारे के पेड़ के नीचे। ठंडी हवा में हजामत बनाऊंगा ।"

पांचों सिपाही पोखर के किनारे पेड़ की छाया में चले गये। जुलुमसिंह ने वड़े प्रेम से सबकी हजामत बनाई और सिपाहियों से कहा, "सरकार, आप पांचों आदमी एक-एक वार पोखर में डुबकी लगाओ। जो जितनी देर में निकलेगा, उसकी दाढ़ी उतनी ही देर में बढ़ेगी ।"

"ठीक है।" सिपाही राजी हो गये ।

इसके वाद पांचों सिपाही पोखर में डुबकी लगाने लगे। हरेक अपने मन में सोच रहा था कि मैं सबसे पीछे निकलूंगा। इसी बीच मौका पाकर जुलुमसिंह सबके कपड़े-लत्ते और हथियार लेकर चम्पत हो गया ।

जब सिपाहियों में से एक ने तंग आकर अपना सिर बाहर निकाला तो देखता क्या है कि बाहर किनारे पर एकदम सुनसान है। न वह नाई है, न उनके कपड़े-लत्ते, न उनके हथियार।

पांचों नंगे थे। बाहर निकलें तो कैसे ? सोचने लगे—हो-न-हो, वह ठग था। हम लोगों को चकमा देकर चला गया। अब तो राजा से भी सजा मिलेगी।

उधर जुलुमसिंह ने घर पहुंचकर अपनी मां को सारा समाचार दिया। फिर ज्योतिषी का रूप धर, पोथी-पत्रा साथ में ले सिपाहियों के घर पहुंचा। वहां जाकर उसने कुशल-समाचार पूछना शुरू किया।

सिपाहियों के घरवालों ने कहा, "क्या बताऊं पंडितजी, नगर में एक ठग आया हुआ है। सब-के-सब नगर की रखवाली करने सबेरे के गये हैं। अभी तक नहीं लोटे। रात होने को आई। पता नहीं, अबतक क्यों नहीं आये !"

ज्योतिषी बोले, "यह कैसा ठग है ! ठगता है, पर ठगाई नहीं खाता। आज उसीके पीछे वे लोग परेशान हैं। आज तुम उनके आने की राह मत देखना। हां, रात को पांच डायनें तुम्हारे घर आनेवाली हैं। वे बिल्कुल नंगी होंगी और अपनेको सिपाही कहेंगी। उनसे सावधान रहना। उनको भगाने के लिए मकान की छत पर ईंट-पत्थर जमा करके रख लेना और उनके आते ही उन्हें भगा देना, नहीं तो वे तुम्हारे घर को लूट लेंगी और तरह-तरह के जादू-टोने कर देंगी। उनके बहकावे में मत आना।"

इतना कहकर अपना सीधा लेकर ज्योतिषी रफूचक्कर हो गये।

ज्योतिषी के कहने के अनुसार सिपाहियों के घरवाले तैयार होकर बैठ गये। घड़ीभर रात बीतने पर पांचों सिपाही पोखर से निकलकर नंग-धड़ंग अपने घर के पास पहुंचे। उन्हें देखते ही

ज्योतिषी महाराज की बात याद करके उनके घरवालों ने उन-पर ईंट-पत्थर बरसाने शुरू किये। चोटों के मारे बेचारे बहुत रोये-चिल्लाये, अपना परिचय दिया, पर कौन विश्वास करता! अंत में लहूलुहान होकर वे पांचों बेहोश होकर गिर पड़े। उन्हें मुर्दा समझकर घरवाले डरते-डरते उनके पास आये। रोशनी में जब उन्हें देखा तो आंखें खुलीं।

उधर राजा जालिमसिंह ने सिपाहियों के न लौटने पर उनके घर आदमी भेजे। सारा हाल सुनकर राजा बहुत नाराज हुए और उन्हें नौकरी से निकाल दिया। ठग की गिरफ्तारी के लिए उन्होंने और भी कड़ा प्रबन्ध किया।

उस दिन ठग कहीं बाहर नहीं निकला। उसकी माता ने तोते को खबर लाने शहर भेजा। उसने आकर बताया कि आज रात को राजा ने ठग को पकड़ने के लिए थानेदार को तैनात किया है। आधी रात बीत जाने पर जुलुमसिंह एक औरत का रूप धारण करके हाथ में परात और उसमें चौमुख दीया जला-कर नगर के दरवाजे पर आया। आधीरात गये अकेली स्त्री को देखकर थानेदार ने उसे रोका, पूछा "कौन है ?"

स्त्री बोली, "मेरा पति बहुत बीमार है। मैं उसके भले के लिए चौराहे पर चौमुख दीया जलाकर पूजा करने जा रही हूं।"

औरत की बात अनसुनी करके थानेदार उसे कचहरी ले गया। वहां कठबेड़ी देखकर स्त्री ने थानेदार से पूछा, "यह क्या है, जी ?"

थानेदार बोला, "जो लोग चोरी-बदमाशी करते हैं, उनको इसी काठ में फंसाकर सजा दी जाती है। इसमें फंसने के बाद

आदमी विना निकाले निकल नहीं सकता है।"

स्त्री ने नाज-नखरा दिखाते हुए कहा, "तुम भी गजब के थानेदार हो, जी। भला इस काठ में आदमी को कैसे फंसाया जा सकता है! जरा मुझे इसमें फंसाकर दिखाओ तो जानूं।"

थानेदार बोला, "हे सुन्दरी, तुम्हारे नाजुक शरीर को इसमें कैसे फंसा सकता हूं। काठ में घुसते ही तुम्हारी कोमल चमड़ी छिल जायगी। फिर अगर तुम्हें काठ में फंसाने की बात किसीने राजा के कान तक पहुंचा दी तो राजा मेरी जान ले लेगा। इसलिए मैं खुद इसमें फंसकर तुम्हें दिखलाये देता हूं। तुम धीरे-से काठ के मुंह को बन्द कर देना और मेरे कहने पर उसे खोल देना।"

थानेदार के बताये ढंग से उस औरत ने थानेदार को काठ में फंसा दिया। फिर उसके मुंह पर कालिख-चूना पोतकर और उसके हथियार और पोशाक लेकर अपने घर का रास्ता लिया। घर आकर अपनी माता को सारा हाल कह-सुनाया।

बड़े सबेरे राजा ने सिपाहियों को कचहरी भेजा। वहां वे क्या देखते हैं कि थानेदार के मुंह पर कालिख-चूना पुता हुआ है और वह नंग-धड़ंग काठ में फंसा सिर पीट रहा है।

विना कपड़े और विना हथियार के थानेदार की खबर सुनकर राजा को बड़ा क्रोध आया। उसने उसे दिनभर उसी तरह काठ में फंसे रखने की आज्ञा दी। फिर नगर में ढिंढोरा पिटवाया कि "जो कोई जुलुमसिंह को पकड़कर लावेगा, उसे मुंहमांगा इनाम दिया जायगा।"

नगर में कोई भी ठग को पकड़ने के लिए तैयार न हुआ। उसी नगर में एक दूती रहती थी। राजा के दरबार में पहुंचकर

उसने राजा से कहा, "मैं ठग को पकड़कर ला सकती हूं।"

राजा ने पूछा, "तुममें कौन-सी सिफत है कि तुम ठग को पकड़ सकती हो ?"

दूती बोली, "महाराज, मैं तो ऐसे-ऐसे कमाल करके दिखा सकती हूं, जो किसीने आजतक न देखे हों और न सुने हों। अधिक क्या कहूं ? कहें तो आसमान में छेद करके दिखा दूं, तारे तोड़कर ला दूं।"

थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद राजा ने सोचा, "जो इतने बड़े-बड़े कमाल करके दिखा सकती है, वह जरूर जुलुमसिंह को फंसा सकती है।"

उसने पूछा, "ठग को फंसाने के लिए तुम्हें क्या चाहिए ?"

दूती बोली, "सोने का जेवर और बाग में झूला डालने के लिए रेशम की डोर।"

उसे ये चीजें मिल गईं। रेशम की डोर ले, सोलहों सिंगार कर, बत्तीसौ आभरण पहन, झमाझम करती हुई वह राजा के बाग में पहुंची और एक आम के पेड़ की छाया में झूला डालकर झूलने लगी।

इसकी खबर तोते ने जाकर रानी को दे दी।

इस बार जुलुमसिंह ने साधु का भेस बनाया और झोली में दारू की बोतल डालकर घूमता हुआ बाग में जा पहुंचा।

वहां जाकर देखता क्या है कि एक बड़ी सुन्दर स्त्री सज-धजकर झूले पर झूल रही है। उसके जोड़ की सुन्दरी उस राज्य में ही नहीं, सारे द्वीप में नहीं थी।

गेरुवे कपड़ों में उस रसीले-छबीले युवक को देखते ही दूती

उसपर मोहित हो गई और मुस्कराती हुई बोली, "दण्डवत्, बाबा !"

साधु ने मुस्कराकर आशीर्वाद दिया, "मनोकामना पूरन हो, देवी !"

इसके बाद दूती ने साधु महाराज से उसके साथ झूले पर झूलने को कहा। दोनों झूम-झूमकर झूलने लगे। झूलते-झूलते दूती की निगाह झोले में रक्खी बोतल पर पड़ी। उसने उसे बाहर निकाल लिया। फिर क्या था ! उसने खूब चढ़ाई और बेहोश हो गई। साधु ने तब उसकी पोशाक और गहने उतार लिये और उन्हें लेकर घर पहुंचा।

उधर शाम को जब दूती घर न पहुंची तो राजा ने उसे ढूंढ़ने के लिए सिपाहियों को भेजा। सिपाहियों ने बाग में जाकर देखा कि दूती के सिर के बाल बिखरे हुए हैं और नंगी होकर बेहोश पड़ी है। सिपाहियों ने उसे उठाकर उसके घर पहुंचाया और सब समाचार राजा को कह सुनाया।

राजा बहुत हैरानी में पड़ गये कि आखिर क्या हो ! प्रजा ठग के मारे परेशान हो गई है। कोई उसे पकड़ नहीं पा रहा है। जो पकड़ने जाता है, वही ठगा जाता है। बहुत सोचने के बाद अंत में राजा ने खुद जुलुमसिंह को पकड़ने की घोषणा करवाई।

तोते ने झट रानी को इसकी खबर दे दी।

अपनी मनोकामना पूरी होते देख जुलुमसिंह की मां की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने बेटे को सब तरह से समझा-बुझाकर भिखारिन के वेश में नगर को भेजा। कंगाल भिखारिन नगर में एक साहूकार के दरवाजे पर गई। बोली, "मुझे रात-भर रहने के लिए थोड़ी जगह दे दीजिये और अगले दिन के

लिए कुछ काम भी।" साहूकार ने इन्कार कर दिया। पर जब वह गिड़गिड़ाई तो साहूकारिन को उसपर दया आ गई और उसने अपने पति से कहकर रातभर के लिए उसे जगह दिलवा दी। सवेरे से कोदों दलने के लिए एक मन कोदों मंगवाकर दे दिया।

रात को राजा घोड़े पर सवार हो, ढाल-तलवार ले, पहरे पर स्वयं आ खड़े हुए। नगर का चक्कर लगाते-लगाते राजा थक गया। आधी रात बीत गई, पर ठग का कहीं पता तक न चला। तीसरा पहर भी निकल गया। चौथे पहर में राजा को दूर किसी के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी।

घोड़ा दौड़ाता हुआ राजा फौरन वहां जा पहुंचा। देखता क्या है कि एक फटे-हाल बुढ़िया गली में चक्की पर कोदों दल रही है। वही चीख रही थी। राजा ने उसे चुप किया। पूछा, "क्या बात है ?" वह बोली, "अभी कोई आया था। बुरी तरह से मुझे झकझोरकर मेरे घूसा मारा और भाग गया।" राजा ने पूछा, "वह किधर गया ?" बुढ़िया के बताने पर राजा ने उधर ही घोड़ा दौड़ाया। कुछ दूर जाने पर राजा को फिर वही चीख सुनाई दी। राजा लौट आया। पूछने पर बुढ़िया ने कहा, "तुम्हारे जाते ही वह आ गया और एक घूंसा फिर जमाकर चला गया।"

इस बार राजा ने दूसरी तरफ घोड़ा दौड़ाया, पर कहीं कुछ पता न चला।

जब दो-तीन बार ऐसा ही हुआ और वह आदमी पकड़ में नहीं आया तो बुढ़िया ने कहा, "इस तरह वह ठग पकड़ में नहीं आने का। तुम मेरी एक बात मानो तो ठग फौरन हाथ में आ

जायगा और तुम्हारी भाग-दौड़ बच जायगी।"

राजा ने पूछा, "सो कैसे ?"

बुढ़िया बोली, "तुम मेरे कपड़े पहन लो और मैं तुम्हारे। जब तुम मेरे कपड़े पहनकर कोदों दलने लगोगे तो ठग बुढ़िया समझकर आवेगा। तुम मौका पाकर उसे पकड़ लेना। तबतक मैं तुम्हारे घोड़े की रखवाली करूंगी।"

बुढ़िया की बात राजा को ठीक लगी। उसने बुढ़िया के कपड़े पहन लिये और चक्की पर बैठकर कोदों दलने लगा।

उधर जुलुमसिंह ने क्या किया कि राजा की पोशाक पहनकर, घोड़े पर सवार हो, हाथ में ढाल-तलवार ले सीधा अपनी मां के पास पहुंचा और उसे सारा हाल कह-सुनाया।

कोदों दलते-दलते राजा थक गया, पर न तो ठग आया और न बुढ़िया ही लौटी। कुछ देर के बाद पौ फटने लगी, दिन का उजाला फैलने लगा। अब राजा समझा कि हो-न-हो, यह सब ठग की कारस्तानी थी। वह बहुत लज्जित हुआ और घबराया। पर कर क्या सकता था ?

उधर जुलुमसिंह की माता नहाई-धोई और सोलहों सिंगार कर अपने बेटे के साथ राजा से मिलने चली। पास आने पर उसको देखते ही राजा को बारह बरस पुरानी बात याद हो आई। बोला, "रानी, तुम जीतीं, मैं हारा।"

यह सुनकर रानी मुस्कराई। उसने राजा को कपड़े बदलने के लिए दिये। राजा ने जुलुमसिंह को छाती से लगा लिया। तीनों महल में आये और मौज से रहने लगे। □

चारि यार

एक गांव में चारि यार रहैत छलाह—एक राजाक वेटा, दोसर दीवानक बेटा, तेसर सोनारक बेटा आओर चारिम कहारक वेटा। एक समय चारू दोस घुमक्कड़ि करक विचार केलन्हि। चारू दोस विदा भेलाह। किछु दूर गेलाक वाद राजाक वेटा अपन दोस सबसे पूछलयिन्ह जे दोस, हमरा सबमें कोन-कोन गुणक विशेषता अछि तकर फरिछौठ भ जेबाक चाही।

दीवानक बेटा बजलाह, "दोस, हमरा में ते ओ गुण अछि जे बिनु अपना मीतक स्त्री के देखने प्रथमहि दृष्टि में चीन्हि लेबैक।"

तकरबाद सोनारक बेटा बजलाह—"हम तें वोहि गुण से परिचित छी जे हजार कोस दूर पर रहितहुं अत्यन्त शीघ्र अपन मीतक स्थान पर पहुंच सकैत छी।"

आब कहारक बेटा बाजलाह—"हमरा में ओ गुण अछि जे मरलाक बारह बरष उपरान्त धरि यदि लाश भेटि जाय तें हम ओकरा जिया सकैत छी।"

चारों यार ताली बजवैत उठिकय चललाह। किछु दूर गेलाक बाद राजाक बेटा के नदीक वेग जोर केलकैन्हि। वो अपन दोम सबके शनैः-शनैः चलवाक इशारा कहि, नदी दिस गेलाह। किछु देरक बाद जखन वो अयला व अपन मीत सबके कतहुं नहिं देखि परम चिन्तित भै उठलाह; तथापि राजाक बेटा अपन मीत सबहक खोज में किछु दूर आगां बढ़लाह तं तिमुहामी—भेटलन्हि। ओ एक रास्ता पकड़ि बिदा भेलाह। किछु दूर गेलाक पश्चात् बड़ा भारी जंगल भेटलन्हि। वोहि जंगल में बहुत बड़का-बड़का मकान छलैक। एक मकान में परम सुन्दरी लड़की रहैत छलि। वो राजाक बेटा के देखि परम पुलकित भै उठलि। ओ मकान राक्षसक छलैक आओर वो लड़की राक्षसक बेटी छली। परन्तु आश्चर्यक गप ई जे राक्षसक होइतहुं ओ मनुष्य जकां आचरण करैत छलि। एतेक धरि जे राजाक बेटा आओर राक्षसक बेटी दूनू में गपसप सेहो भेलन्हि। वो लड़की राजाक बेटा के अपना घर में राखि लेलक। कारण वोकरा राजाक बेटा से विवाह करबाव मोन भगेलैक। सन्ध्या काल जखन राक्षस आयल तं अपना बेटी से पूछलक—"बेटी, मानुस छू...मानुस छू!"

राक्षसक बेटी बाजलीह, "बाबूजी, एतय मानुषक गंध कत

सँ एतै । अहां के ओहीना भ्रम होयत रहैत अछि ।"

एतबेहि में एकर चर्चा समाप्त भय गेल आओर खा-पी कय सब सूति रहल ।

एक दिन राजाक बेटा राक्षसक बेटी से कहलक जे "अहां हमर रक्षा कतेक दिन धरि करब, कोनो-ने-कोनो दिन राक्षस हमरा अवश्ये खा जायेत, तें हेतु अहां अपन बाबूजी से पूछि वैन्हि जे हुनक प्राण कतय बसैत अछि ?"

जखन राक्षस आयल त बेटी प्रश्न पूछिदेलकैन्हि, "बाबूजी, अहांक प्राण कतय रहैत अछि ?"

पैहनेत राक्षस किछु-किछु कहि बात अनठाबय लागल। मुदा बेटीक बहुत जिद्द केला पर दैत्य बाजल, "बेटी, अपना दुआर पर जे ताड़क गाछ छैक ने, वही पर चोचाक एक टा खोंता छैक, हमर प्राण वोहि खोंता में रहैत अछि ।"

प्रात भेने राक्षस पुनः जंगल दिस बिदा भेल। राक्षसक गेलाक उपरान्त राजाक बेटा ओ राक्षसक बेटी दूनू गोटे विचार कय वोहि ताड़क गाछक लग में आगि लगेलक अओर तत्पश्चात् ताड़क गाछ पर चढ़ि, वोहि चोचाक खोंता के अंग-भंग कय देलैन्ह। खोंताके तोड़ितहि राक्षस बूझि गेल अओर तुरंत जंगल से घर दिस बिदा भेल। राजाक बेटा वोहि खोंता के जल्दी सँ आगि में खसा अग्नि से स्वाहा कै देलन्हि, राक्षस ओहि गाछ तर आवैत-आवैत धड़ाम से गिर के अपन प्राण त्यागि देलक।

राक्षसक बेटी आओर राजाक बेटा दूनू गोटे में विवाह भै गलैक। दूनू गोटे सुख से जीवन यापन करय लागल। किछु दिनक बाद एक समय में राजाक बेटा शिकार करय लेल जंगल दिस विदा भेलाह। राक्षसक बेटी सेहो अपन बहिकरनीक संग

नदी में स्नान करबालेल गेलोह । स्नान करबाक समय वोहि लड़कीक एकटा केसक लट टूटि गेलैन्हि । से वो एक पुड़िया में बन्दकै नदीक कात में राखिदेलैन्हि ।

कोनो दोसर राजाक वेटा ओही नदीक कात में सिपाही क संग घूमि रहल छलाह । हुनक ध्यान वाहिलट पर पड़लन्हि । लट बारह हाथक छलैह । ई देखि राजाक वेटा विचारलक जे एही बारह हाथक केशवाली लड़की से विवाह कैलजाय । ई अवश्ये महासुन्दरी हेती । ई विचारलक ओही नदीक कछेर पर पड़ि रहलाह । सिपाही सवहक बहुतों हठ केला उतरान्तवो नहिं ठलाह । पश्चात् राजा सेहो अयलाह अओर कारण पूछल-कैन । राजकुमार राजा से सत्त करौलन्हि जे "अहां एक बातक लेल सत्त करी त हम कहब ।"

राजा तैयार भै गेलाह । तखन राजकुमार बारह हाथक केश वाहर कय कहल कैक जे "हम एहि बारह हाथक केशवाली लड़की से बियाह करवाक इच्छा राखैत छी ।"

राजा हँसिपड़लाह, अओर बजलाह, "ई कोन भारी बात थिक जकरा वास्ते हमरा से सत्त करौलहु । हम तुरत बारह हाथ केशवाली कन्याक खोज करबाक हेतु दूत पठा रहलछी ।"

राजा अपना राज्य में घोषणा केलन्हि, "जे कियो बारह हाथक केशवाली लड़की के आनत से एहि राज्यक आधा भागक हकदार होयत ।"

केयो तैयार नहिं भेल । परन्तु, वोहि राज्य में एक कुबरी बुढ़िया रहैत छली । ओ डायन छली । वो राजा से कहलकैक, "जे हम बारह हाथ केशवाली लड़की के आनि सकैत छी ।" वो बुढ़िया छ मास आगू तथा छ मास पाछूक गप बुझैत छली ।

बुढ़िया नाहके नदी में खसौलक आ गुनगुनावैत बाजल, "यदि सत्य राजाक नाह छहते वोहि घाट लागह, जाहि घाट में बारह हाथ केशवाली लड़की स्नान करैत अछि।"

नाह ओहि घाट में आबि के लागिगेल। बुढ़िया नाह के घाट से किछु हटाक लगौलक आओर बेटी-बेटी कहैत वोहि राक्षसक लड़कीक मकान में प्रवेश केलक, आ ओहि लड़की से कहलक "जे हम तोहर मौसी थिकियौक।"

यहि बहाना से बुढ़िया लड़कीक संग रहल लागल। किछु दिनक बाद बुढ़िया लड़की से पूछलक, "गे बेटी, तोरा राजकुमारक प्राणक पता रखवाक चाही। कोनो बेर-बिपैत में काज देतौ। हम तेहन मतंर बता देवौ कि नहिं जे···।"

एक दिन राजाक लड़का जखन शिकार से एला, त राक्षसक बेटी हुनक प्राणक विषय में पूछि बैसलि, "अहाँक प्राण कते रहैत अछि से हमरा सचे-सच बता दिय।"

पहिने त राजाक बेटा बहुत टारक कोशिश केलन्हि। तथापि बहुत जिद्दक बाद वो बाजलाह, "हमर प्राण एहि तरवारि में रहैत अछि। यदि हम कहियो मरि जाय त हमर लाश के जरायल नहिं जाय। हमरा लाश के सन्दूक में बन्द कयदेव आ बगल में इ तरवारि राखि देव। कारण हमर तीनटा यार छथि। यदि बारहवरष धरि हुनका लोकनिकें हमरा लाशक पता लागि जैन्ह तं हमरा वो पुनः जिया देता।" इ कहि राजकुमार सूति रहलाह।

दोसर दिन जखन राजकुमार शिकारक हेतु जंगल दिस बिदा भेलाह त बुढ़िया हुनक प्राणक विषयमें पूछि बैसलि।

लड़की बुढ़िया सें सब वृत्तान्त कहि सुनौलक।

एक दिनक कथा थिक जे वो लड़की कतौ बाहर गेलि, ताहि बीच मौका पाबि बुढ़िया आगि जरा कैं तरवारि के ओहि में खसा देलक । राजकुमारक देह जरय लागलैक । राजकुमार शिकार से पड़ौलाह । घरक समीप आबतहि-आबतहि समाप्त भ गेलाह ।

तावत में राक्षसक बेटी से हो आबि गेली । वो कानय-खीझय लागली । परन्तु बुढ़िया बुझबे-समुझाबें लागली जे "बेटी, जगत में होनी बड़ प्रबल होयत छैक ओकरा केयो रोकि नहिं सकैत अछि ।"

जब बुढ़िया लाश के जराबक हेतु कहलकैक त, लड़की बाजि उठली—"नहिं लाश के हम नहिं जरेबैक ।" इ कहि वो लाश के सन्दूक में बन्द कय देलक आ बगल में तरवारि के राखि देलक ।

किछ दिनक उपरान्त बुढ़िया लड़की से बाजलीह—"गे बेटी, चलह आइ नदी में स्नान करी ।

नदी कात गेला उपरान्त बुढ़िया पुनः कहलकैक—"गे बेटी, चलह एहि छोटका नाह पर कनिए देर घूमि आबि ?"

पहिने ते लड़की तैयार नहिं भेली । परन्तु बहुत जिद्द केला उत्तर वो तैयार भेलि । नाह पर चढ़ि बीच धार में पहुंचतहि बुढ़िया बाजल—"जौं सत्त के राजाक नाहछहते झट दे राजाक घाट पहुंच !"

नाह राजाक घाट पर बात कहैत लागिगेल ।

एहि बीच में लड़की क अन्तर्दशा क हाल लड़की क अन्तरे जानैत छल । दोसर वोहि दुःखक वर्जन नहिं करि सकैत अछि ।

राजाक लड़का लड़की के देखि परम आनदिन्त वो प्रफुल्लित भेलाह। बिवाहक व्यवस्था होमय लागल। मुदा लड़की बाजलीह—"वियाह एखन नहि होनय। वारह वरष धरि सदाव्रत देलाक उपरान्त हम व्याह करब।"

ई प्रस्ताव सब गोटे के मान्य भेलैन्हि जें बारह वरष बीत् में कतेक दिन लागबे करतैक। ताहि बीच में लड़कीक आचरणक पता सेहो नीक जकालागि जायत। कोनो साग-वैंगन त थिक नहि जे आइ उगल गेलों न काल्हि नफा में रहब। इ ते जीयन-मरण क साथी···।

लड़की सदाव्रत बाटय लागलीह।

एक समय राजकुमारक तीनू दोस दाढ़ी बढ़ा अपन दोसक चिन्ता में घुमैत-फिरैत वोहि घाट पर पहुंचलाह। वारह बरष पूर् में कनिए देर रहैक। दीवानक बेटा राक्षसक बेटी के देख-तहि चीन्हि लेलकन्हि आऔर चिन्हलाक पश्चात् लड़की से अपन परिचय देलकैन्हि।

लड़की सब वृत्तान्त दोस के सुना देलकैन।

तीनू यार लड़की के धीरज देलकैन आ कहलकैन्ह, "अखन अहां तुरंत हमरा दोसक जगह पर चलू। कोनो चिन्ताक बात नहिं। हम आवि गेलछी। अहां घबड़ाऊ नहिं।"

इसब बात-विचार भइये रहल छलकि ताबत में दोसर राजाक तीनू बेटी वियाहक हेतु, राक्षसक बेटी के बजावय लेल आविगेलि।

"व्याह ते हेवै करतैक"—राक्षसक बेटी बाजलीह। "किछु काल भजन सूनि लियह। सुनवा में आयल अछि जे ई बाबाजी लोकनि भजन बहुत सुन्दर गावैत छथि।"

वावाजीक आसन पर तीनू बहिन आ राक्षसक बेटी बैसि रहलीह। वो तीनों मीत गाना गावय लागलाह। तावत में सोनारक बेटा अपन गुन चलौलक आ आसन धरती ओ आसमान बीच उड़ि चलल। क्षण-पलक में अपन दोसक ओहि स्थान में आयल। सोनारक बेटा अपन गुण-मंतर प्रगट करैत सन्दूक खोलि के तलवारि के जंग सब छोड़बे लागलाह। तलवारिक जंग जहिना छुटैत जाइत छल तहिना-तहिना राजाक बेटाक शरीर मिलल जाइत छलैक तरवारि एकदम साफ भै गेलैक, आ राजाक बेटा जीवित भै गेलाह।

सब यार गला-से-गला लगा मिललाह। राजाक लड़का पुनः राक्षसक बेटी से ब्याह कयलन्हि। तत्पश्चात् तीनू यार दोसर राजाक तीनू बेटी से ब्याह कयलन्हि।

एहि प्रकार चारु यार अपन-अपन स्त्रीक संग लय हँसी-खुशी से अपन घर पहुंचलाह। □

हमारी
लोक कथाएं

□□